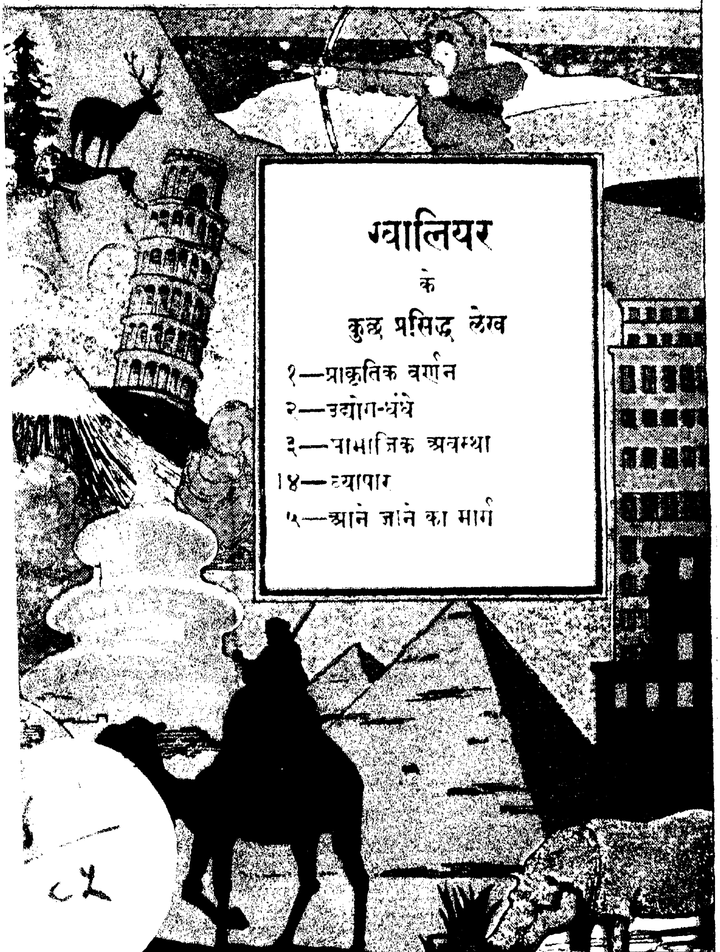
देश दर्शन

ग्वालियर



ग्वालियर

के

कुछ प्रसिद्ध लेख

भूगोल कार्यालय — प्रयाग

सितम्बर १९४१] **देश-दर्शन** [आश्विन १९९८

(पुस्तकाकार सचित्र मासिक)

वर्ष ३] ग्वालियर [संख्या ३

सम्पादक

पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक

भूगोल-कार्यालय, इलाहाबाद

Annual Subs.	Rs. 4/-	वार्षिक मूल्य ४)
Foreign	Rs. 6/-	विदेश में ६)
This copy	As. -/6/-	इस प्रति का ।=)

विषय-सूची

स्थिति

स्थिति और विस्तार

ग्वालियर राज्य में महाराज सींधिया का शासन है। ग्वालियर राज्य मध्य भारत एजेन्सी में सब से बड़ा है। इस राज्य का क्षेत्रफल २५०४१ वर्ग मील है। वास्तव में यह राज्य दो प्रधान भागों में बँटा है। उत्तरी भाग को ग्वालियर और दक्षिणी भाग को मालवा कहते हैं।

उत्तरी भाग २३३० से २६०४६ उत्तरी अक्षांस तक और ७६६ से ७६३८ पूर्वी देशान्तर तक फैला हुआ है। समस्त भारत उत्तरी प्रदेश का क्षेत्रफल १७०२० वर्गमील है। इस भाग के उत्तर-पूर्व और उत्तर-पश्चिम में चम्बल नदी बहती है। चम्बल नदी उत्तरी भाग को आगरा और इटावा (संयुक्त प्रान्त) ज़िलों तथा धौलपुर और जयपुर राज्यों से अलग करती है। पूर्व की ओर जालौन, झांसी और सागर के ज़िले हैं। दक्षिण में भोपाल, खिलचीपुर, राजगढ़ और टोंक (सिरोज) राज्य हैं। पश्चिम की ओर झालवार, टोंक और कोटा के राज्य स्थित हैं।

देश दर्शन

मालवा का भाग दूर दूर बिखरे हुये कई भागों से मिल कर बना है। इन भागों के बीच बीच में दूसरी रियासतें आ गई हैं। मालवा प्रदेश का क्षेत्रफल ८०२१ वर्ग मील है। मालवा में शासन के लिये अमझेरा का जिला भी मिला है यद्यपि वह मालवा से अलग विंध्या प्रदेश में स्थित है।





प्राकृतिक वर्णन

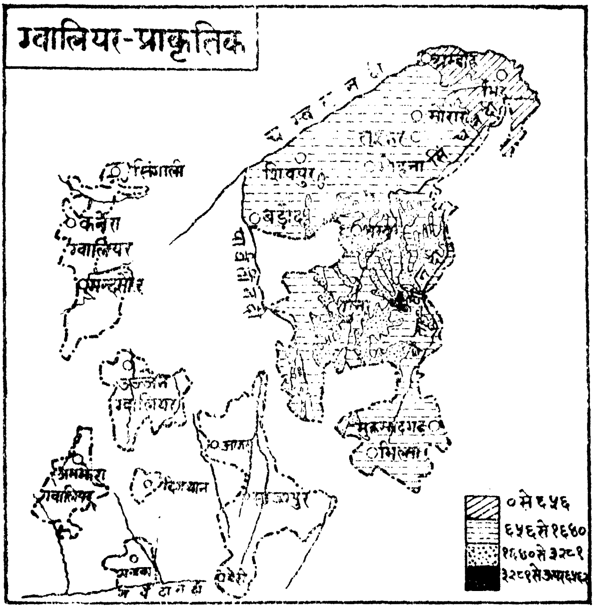
ग्वालियर राज्य के तीन मुख्य प्राकृतिक भाग हैं—

(१) मैदान का प्रायः समतल प्रदेश ग्वालियर नगर के उत्तर-पूर्व और पश्चिम की ओर स्थित है। ग्वालियर राज्य के भिन्ड तोंवरगढ़, भिन्ड और शिवपुर के जिले स्थित हैं जिसका क्षेत्रफल ५,८८४ वर्ग मील है। यह भाग समुद्र के धरातल से ५०० से ६०० फुट तक ऊँचा है। ग्वालियर ६६७ फुट, मोरार ५२६ फुट और शिवपुर ८५६ फुट समुद्र धरातल से ऊँचे हैं।

(२) पठार—ग्वालियर नगर के ८० मील दक्षिण में जमीन एकदम ऊंची होने लगती है अन्त में मालवा का पठार आ जाता है। इस पठार की औसत ऊँचाई १५०० फुट है। इस प्रदेश का क्षेत्रफल १७८५६ वर्ग मील है। वास्तव में ग्वालियर राज्य की ७० फी सदी जमीन पठार में ही स्थित है।

(३) पहाड़ी भाग—अमझोरा जिले में है। इसकी औसत ऊंचाई १८०० फुट है। यूँ तो यहां ऊँचे पहाड़ और नीची घाटियां भी हैं जो अधिकतर वनों से ढके

हुये हैं। पहाड़ी भाग का क्षेत्रफल केवल १३०१ वर्ग मील है। विन्ध्याचल पर्वत की दो शाखाएं ग्वालियर राज्य को पार करती हैं। एक शाखा भिलसा से उत्तर



की ओर चलकर राज्य के मध्य भाग को पार करती हुई ग्वालियर नगर तक जाती है। दूसरी पर्वत शाखा उज्जैन और नीमच जिलों में होकर पहली शाखा के

समानान्तर चलती है। नर्मदा के उत्तर में विन्ध्याचल की प्रधान श्रेणी राज्य का जलविभाजक बनाती है। प्रायः सभी नदियां उत्तर की ओर बहती हैं। चम्बल इन सब से अधिक प्रसिद्ध है। कीली सिंध, त्तिवा, पश्चिमी पार्वती इसकी सहायक नदियां हैं। बेतवा, सिंध और इसकी सहायक पूर्वी पार्वती कुवारी दूसरी नदियां हैं।

भौगार्भिक रचना के अनुसार ग्वालियर राज्य चार भागों में बंटा है। प्रथम भाग में प्रधान ग्वालियर है। यहां विन्ध्या की कई श्रेणियाँ उत्तर से दक्षिण को जाती हैं। उत्तरी भाग में वह उत्तर-पूर्व की ओर मुड़कर चम्बल नदी को समानान्तर हो जाती हैं। चार प्रधान श्रेणियों के बलुवा पत्थर की भारी भारी तहें जमी हुई हैं। चौथी श्रेणी के आगे चम्बल के समीप की भूमि कछारी मिट्टी से ढकी हुई है। इस कछारी मिट्टी के नीचे सिरबू चट्टानें ऊपर निकल आती हैं। इन्हीं के पड़ोस में चूने का पत्थर है।

२६ उत्तरी अक्षांस के उत्तर में कैमूर का बलुवा पत्थर बिल्लौरी चट्टानों के ऊपर नहीं मिलता है। इधर

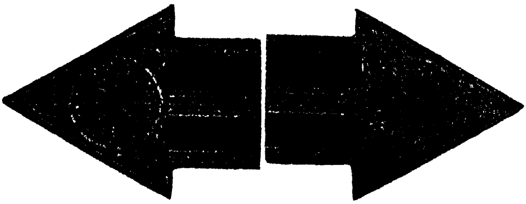
वह कछारी धरती में धँसा हुआ है। यह चट्टानें विन्ध्याचल से भी अधिक पुरानी हैं। यह बुन्देलखण्ड को विजावर चट्टानों से मिलती जुलती हैं इसी कारण इन्हें बिजावर भी कहते हैं। भूगर्भवेत्ताओं का अनुमान है कि बिजावर चट्टानें विन्ध्याचल की उत्पत्ति के पहले ही मौजूद थीं। इनके सब से निचलो तहों में सफेद पत्थर (क्वार्टज) के जड़े हुये टुकड़ों के ऊपर बलुवा पत्थर की तहें हैं जिसे बहुधा पार पत्थर के नाम से पुकारते हैं। पार कस्बा ग्वालियर से १५ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर इन्हीं पहाड़ियों की तलहटी में बसा है।

नीमच प्रदेश में कई प्रकार की चट्टानें हैं पर इन का अभी पूरा पता नहीं लगाया गया है। इधर दक्षिण का काला आग्नेय पत्थर बहुत है।

अधिक दक्षिण में नर्मदा के समीप बलुवा पत्थर की दो तहों के मध्य में समुद्री जानवरों के ढांचे मिले हैं। बाघ नगर के पास भीतरी चट्टानों में प्रस्तर भ्रन्श बहुत है। बाघ नगर के दक्षिण की ओर बौद्ध कन्दराओं में निमार बलुवा पत्थर पाया गया है। बाघ नगर बिजावर चट्टानों पर ही बसा है।

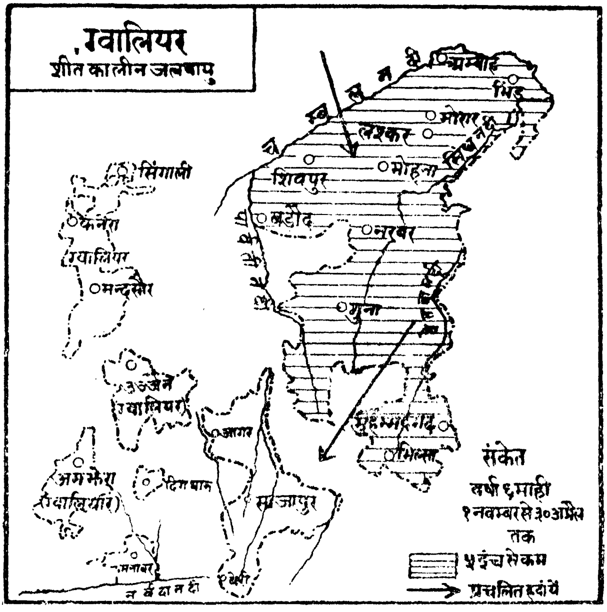


ग्वालियर राज्य के उत्तर में बैनल बृक्ष तथा झाड़ियाँ बहुत हैं। पहाड़ियों के दक्षिण भांति भांति के झाड़ीदार बृक्ष पाए जाते हैं। कई भागों में बांस के बन पाये जाते हैं। अधिक दक्षिण की ओर मध्य भारतीय बन पाए जाते हैं।



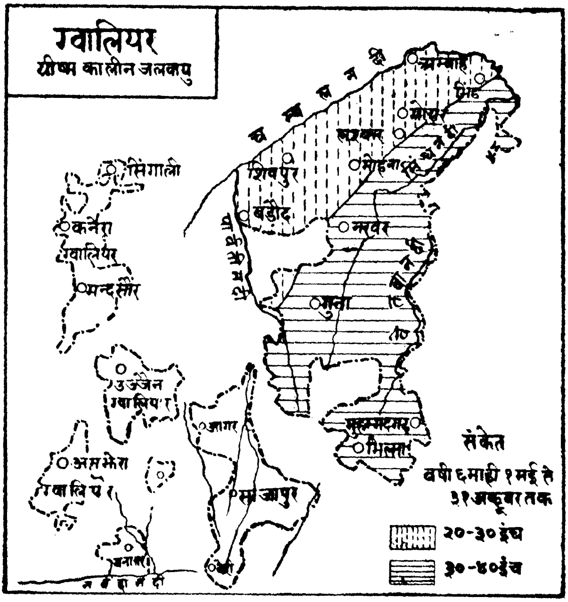
जलवायु

प्राकृतिक विभाग के अनुसार ग्वालियर राज्य की जलवायु बहुत गर्म है और मालवा में कभी सरदी नहीं पड़ती है। उत्तरी ग्वालियर में गरमी के दिनों में २४ घंटे



लू चलती है और रात को भी बहुत ऊँचा तापक्रम रहता है। सरदी के दिनों में तापक्रम बहुत नीचा हो जाता है और पानी जम जाता है। मालवा में रात को सदैव

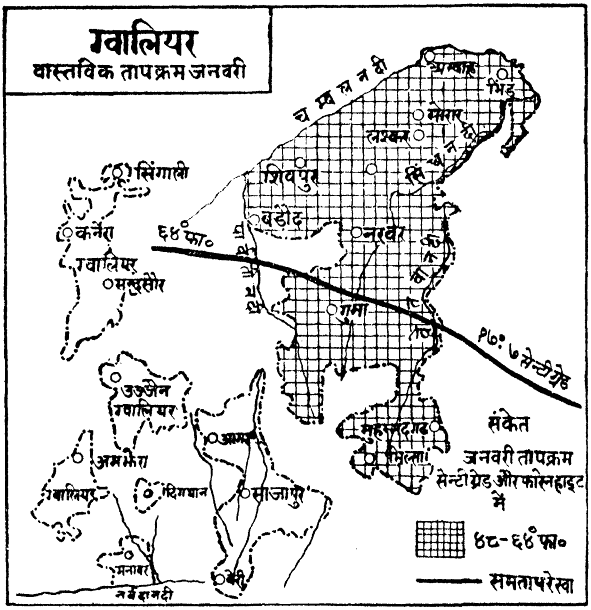
सरदी पड़ती है। ग्रीष्म काल की गर्म रातों में भी वहां सरदी पड़ती है और इसी कारण मालवा की रातें अपने सुहावनेपन के लिये भारत में प्रसिद्ध हैं। सरदी के



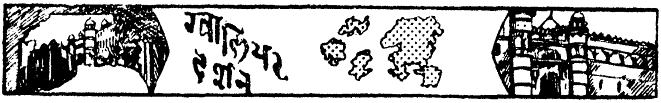
दिनों में भी मालवा में तापक्रम बहुत नीचा नहीं होता है। पाला बहुत कम पड़ता है। पहाड़ी भागों में ग्रीष्म

काल में बहुत गरमी पड़ती है। वहां शीतकाल बहुत छोटा होता है।

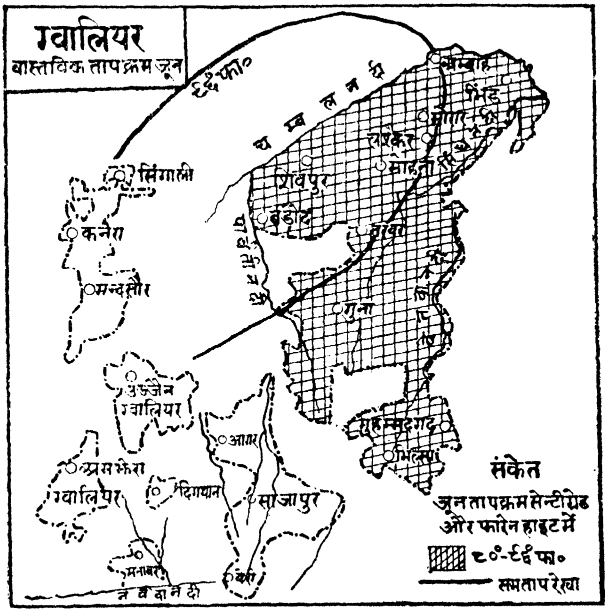
ऊंचे पठारों की जलवायु ने गरमी में अधिक गरम



और न सरदी में अधिक ठंड रहती है। मैदान में गरमी में बहुत गरमी रहती है और सरदी में सरदी भी खूब पड़ती है।



ग्वालियर में ३६ इंच और मालवा में ३२ इंच वर्षा होती है। जुलाई और अगस्त मास में वर्षा अधिक



होती है। ग्वालियर में बंगाल मानसून से और मालवा में बम्बई प्रान्त के मानसून से वर्षा होती है।

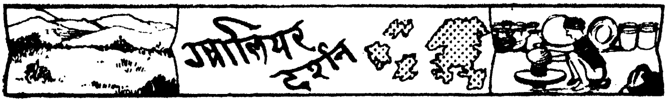


पशु-पक्षी और वन

पहले ग्वालियर राज्य के बनों में हाथी बहुत पाये जाते थे परन्तु अब वहां हाथी नहीं है। जहां कहीं बन अधिक हैं और बनैले पशुओं को छिपने के लिये सुगम स्थान हैं वहां पर चीता, तेन्दुआ सांभर, चीतल, हिरण, भालू, भेड़िया, सियार लोमड़ी जङ्गली कुत्ते तथा बनैले सुअर आदि पशु पाए जाते हैं। गांवों में गाय, बैल, भैंस बकरी भेड़, घोड़े और ऊंट पाले जाते हैं।

राज्य में भांति भांति के साधारण पक्षी पाये जाते हैं। शिकार किये जाने वाले पक्षी भी मिलते हैं। पानी वाले पक्षी भी बहुत हैं। पक्षियों में सब से बड़ा सारस है। नदियों और तालाबों में मछलियां बहुत हैं जिनका लोग शिकार करते हैं। घड़ियाल, बौंच आदि पशु नदियों में मिलते हैं। भांति भांति के सांप और बिच्छू पहाड़ी स्थानों तथा बनों में पाए जाते हैं।

बन प्रायः ग्वालियर गिर्द शिवपुर, इसागढ़, नरवर, भिलसा, शाजापुर, अमझेरा और मन्दसोर जिलों में पाए जाते हैं। बन की लकड़ी फल आदि सरकारी तौर पर बेच दिये जाते हैं जिन्हें ठीकेदार लोग ले कर प्रजा



के हाथ बेचते हैं। जङ्गल से लगभग एक रुपये की वार्षिक आय राज्य को है।

बन में पाये जाने वाले बृक्षों की सूची नीचे दी जाती है।

अकिल या समर बृक्ष के फल पत्ती और तेल दवा के काम आते हैं। अनोल पेड़ का फल खाया जाता है और स्याही बनाने के काम आता है और पत्तियाँ रंग बनाने में प्रयोग की जाती हैं। बांस का प्रयोग बहुत होता है। राज्य में इसके बन हैं। बड़ बृक्ष की पत्तियाँ हाथी को खाने के लिये दी जाती हैं। बेल की लकड़ी सामान तयार करने के काम आती है और फल दवा में काम देता है। भिलावा के फल खाये जाते हैं और स्याही तयार की जाती है।

चीचल्य और चिले बृक्षों की लकड़ी के सामान तयार किया जाता है। चिरोंजी एक प्रकार का मेवा है जिसे लोग पकवान आदि में डाल कर खाते हैं। छियूल की लकड़ी पानी में खराब नहीं होती इसी कारण पानी के अन्दर उसकी लकड़ी का प्रयोग किया जाता है धामन की लकड़ी सामान तयार करने तथा चारकोल

बनाने के काम आती है। धत्र वृक्ष की लकड़ी मकान बनाने में लगाई जाती है। धत्र वृक्ष की छाल दवा में काम आती है। लकड़ी जलाई जाती है और फूल रेशम की रंगाई में काम देता है। दुधि पौदे की लकड़ी चार-कोल तथा दवा बनाने के काम आती है। घेएट का फल चमड़ा तयार करने के काम आता है और लकड़ी से चारकोल तयार किया जाता है। गूलर का फल खाया जाता है। लकड़ी सामान तयार करने तथा चारकोल बनाने के काम आती है। हल्दु वृक्ष की लकड़ी मकान बनाने में प्रयोग की जाती है। हड़ का फल खाया जाता है। हड़ रसायन है। दवा में इसका प्रयोग बहुत होता है। कुसम की लकड़ी ईख पेरने के लिये प्रयोग की जाती है और लाख उस पर पैदा होती है। साग या सागौन की लकड़ी बड़ी मज़बूत होती है और मकान बनाने के काम आती है। सेमल की रुई की तकिया तथा गद्दे बनाये जाते हैं। सीताफल का फल खाया जाता है। शीशम की लकड़ी सागौन की तरह बड़ी मज़बूत होती है और मेज, कुर्सी तथा दूसरे लकड़ी के सामान तयार करने और मकान तयार करने के काम

आती है। चन्दन का वृक्ष बड़ा सुगन्धित होता है। यह रगड़ कर मत्थे में लगाया जाता है। इसकी लकड़ी का तेल निकाला जाता है और इतर तयार किया जाता है। तेंदू की लकड़ी मकान बनाने तथा जलाने के काम आती है।

इसके सिवा तिनच, सिरसों, जामुन, महुआ, बरगद, नीम, रिझदा, साज, शिवन, पाकर, पीपल, कुम्बी, अमिलतास, खजूर, खैर, करौंदा, करदी, कल्ल, काहू, बोर, बबूल और आँजन आदि के वृक्ष पाये जाते हैं।

देश दर्शन

कृषि और खनिज सम्पति

ग्वालियर राज्य की बिजावर चट्टानों में अच्छा लोहा पाया जाता है। पहले पनियार के पास बहुत लोहा निकलता था। पर जब से सस्ता विलायती लोहा आने लगा है तब से राज्य के लोहा निकालने का काम रुक गया है। गंगापुर के पास अभ्रक बहुत है। राज्य में चूने का पत्थर बहुत है। यह सबलगढ़, कोलारस, सीपरी और नीमाच के गिर्द बहुत पाया जाता है। कोलारस का चूने का पत्थर पाषाण लेखन (पत्थर पर छापा) के लिये बहुत प्रयोग होता है। गोहर में कड़ा हरा, नीला, पीला, लाल और धब्बेदार चूने का पत्थर निकाला जाता है जो फर्श (ज़मीन) बनाने के लिये बहुत प्रयोग होता है। चूने के पत्थर और कंकड़ से अच्छा चूना तथा सेमेन्ट तयार की जाती है। स्लेट का पत्थर मोहन स्थान के दक्षिण में मिलता है। मिट्टी के बर्तन बनाने के लिये बिजयपुर, अंतरी, चंदेरी बाघ और ग्वालियर गिर्द में सुन्दर मिट्टी मिलती है। नीमाच, गूना, कोलारस और सीपरी की धरती में अलमोनियम बहुत है परन्तु इसकी उन्नति अभी नहीं की गई है।

विन्ध्या श्रेणी का पत्थर मकान बनाने के काम आता है। ग्वालियर के मन्दिर, महल, क़िले, मस्जिद आदि सभी भवन भिल्सा, ग्यारसपुर और दूसरे विन्ध्या श्रेणी के पत्थर के ही बने हैं। लश्कर के नये मकान बिन्ध्याचल के पत्थर से ही बनाए गये हैं।

ग्वालियर के उत्तर और पूर्व की ओर की भूमि समुद्रतल से ७०० फुट ऊँची है। यहां की धरती कछारी है। वर्षा लगभग ४० इंच होती है। यहां की भूमि में साधारण उपज होती है। यहाँ के निवासी अधिकतर किसान हैं। सिंचाई के लिये बनावटी पानी के सोतों की आवश्यकता है।

मालवा प्रान्त का पठार समुद्रतल से प्रायः १४ फुट ऊँचा है। माल्वा प्रान्त में कुछ भूमि बहुत उपजाऊ है जहां पर यहां के चतुर किसान पोस्ता की खेती करते हैं। पोस्ता, ईख और बाग़ में उत्पन्न किये जाने वाले फलों के लिये सिंचाई की ज़रूरत है।

पर्वतीय प्रदेश की जलवायु मालवा से कम गरम है। पर्वतीय प्रदेश की कुछ भूमि उपजाऊ है। यहां सहारिया, भिल और गोंड जातियां रहती हैं जो खेती

की ओर अधिक ध्यान नहीं देती हैं। इस भाग में २३ इंच वर्षा होती है।

यहां के किसानों ने उपज तथा स्थिति के अनुसार अपनी भूमि को बांट रखा है। काली मिट्टी को वह मार नाम से पुकारते हैं। यह नमकीन काली मिट्टी बहुत समय तक नम रहती है और इसमें रुई की उपज खूब होती है। काबर भूमि मार से कुछ कम उपजाऊ होती है। परवा मिट्टी ग्वालियर के उत्तर में है। यह कछारी धरती में पाई जाती है और भूरी बलुही होती है। दोमट मिट्टी भी परवा की तरह होती है। करमटिया मिट्टी भूरे रंग की होती है और उसमें चावल पैदा होता है। पाथर भूमि पहाड़ी के नीचे पाई जाती है। भूरा या बलुआ भूमि में बाजरा ज्वार आदि नाज बोये जाते हैं। नालों, नदियों के किनारे और तालाबों के नीचे की भूमि कछारी है। राँकड़ और दाँदा भूमि पहाड़ी प्रदेश की होती है।

मालवा की भूमि में और जहां कहीं भी सिंचाई हो सकती है वहां पर दो प्रकार के पौदे एक साथ बोये जाते हैं।



खरीफ की फसल में मकई, बाजरा, ज्वार, धान, अरहर, कुटकी, कोदो, काकुन, साँवाँ, उर्द, मूँग, मोथी, तिल आदि वस्तुएँ बोई जाती हैं।

रबी में गेहूँ, जौ, चना, मसूर, मूँगफली, मटर, सरसों, अल्सी आदि वस्तुओं की उपज होती है।

चावल की खेती लगभग ६० हजार एकड़ में, जुवार लगभग ५ लाख एकड़ में, मक्का एक लाख २६ हजार एकड़ में, चना लगभग ७ लाख एकड़ में, गेहूँ ५ लाख ५ हजार एकड़ में और जौ लगभग ३ हजार एकड़ में बोया जाता है। उर्द, मूँग और मोथी की खेती ३७३२० एकड़ में मूँगफली ३००० एकड़ में और मसूर तथा फली आदि २८००० एकड़ में बोई जाती है।

तिली, अल्सी, रमेली और रामतिल्ली आदि तेलहन की वस्तुओं की उपज ७४००० एकड़ में होती है। कपास, सन और पटसन की खेती १५६००० एकड़ में होती है। पोस्ते की खेती ३६४०० एकड़ में होती है।

अँतरी, सीपरी, कोलार, पहाड़गढ़ में गांजा, भांग की खेती की जाती है।

देश दर्शन

जहां कहीं सिंचाई का प्रबन्ध हो जाता है वहां बाग में उगने वाले फल उगाये जाते हैं।

फलों में खासकर आम, अमरूद, जामुन, इमली, कटहल, केला आदि हैं। आलू, गोभी, पात गोभी, प्याज गाजर, मूली, पालक, सोया, लहसुन आदि साग उगाये जाते हैं।



संक्षिप्त इतिहास

ग्वालियर नाम गोपगिरि या गोपार्दि से बिगड़ कर बना है। जिस पहाड़ी पर प्राचीन नगर बसाया गया था वह उत्तरी सिरे पर मैदान के ऊपर ३४२ फुट ऊँची उठी हुई है। यह पहाड़ी डेढ़ मील लम्बी और ३०० गज़ चौड़ी है। यह पहाड़ी एक पहरेदार की भांति घाटी और मैदान की चौकसी करती है। इस पहाड़ी पर बलुवा पत्थर की विशाल चट्टानें हैं। जिनके बीच में नुकीली चोटियां निकली हुई हैं जो ज़िले की प्राकृतिक दीवार बनाती हैं पर आरम्भ में इस एकान्त स्थान में योगी रहा करते थे उनकी गुफाएँ अब तक मौजूद हैं। अब से लगभग २५० वर्ष पूर्व राजा सौयंसेन ने क़िले की दीवारें बनवाई थी। आगे चलकर यहां पहले कछवाहे फिर चौहान राजपूतों का अधिकार रहा इसके बाद यहां मुसलमान आ डटे पर यह क़िला कभी मुसलमानों और कभी राजपूतों के हाथ रहा।

इसी बीच महाराजा शिवा जी ने महाराष्ट्र में एक नई शक्ति पैदा कर दी थी। उनके मरने के बाद इस नये राष्ट्र की बागडोर पेशवाओं के हाथ में आई। इनका दर्बार पूना में था। इसी दर्बार में १७२५ ई० में देखने

में एक साधारण व्यक्ति ने अपने रोज़ के काम में ही अपूर्व स्वामि-भक्ति दिखलाई और बड़प्पन का परिचय दिया। पेशवा महाराज दर्बार के काम में लगे हुये थे। उनके चप्पलों की चौकसी का काम भावी साम्राज्य के जन्मदाता श्रीरानो जी कर रहे थे। सभा में देरी अधिक लग जाने से बाहर रानो जी को नींद लग गई। वे सो गये लेकिन चप्पल उनकी छाती से लगे हुये थे। बाहर आकर पेशवा महाराज इस विलक्षण स्वामि-भक्ति को देख कर दंग हो गये। वे ताड़ गये कि ऐसा कर्तव्य पालने वाला पुरुष भारी जिम्मेदारी के योग्य है। रानो जी कुछ समय के बाद मालवा में चौथ तथा सरदेश मुखी वसूल करने के लिये भेजे गये। उसके बाद उन्होंने अपनी सिपाहियाना शक्ति से सेनापति का आसन ग्रहण किया। शीघ्र ही वह योग्य राष्ट्र के ऊँचे पद पर पहुँच गये। महाराष्ट्र की अदम्य सेना के वे बड़े ही लोक प्रिय सेनापति थे। मरने पर उन्होंने मालवा के बीच में एक बड़ा राज्य अपने सुपुत्र महादाजी सिंधिया को छोड़ा।

महादाजी(१७६९-९४ई०)—६ जनवरी सन् १७६१ई०

को पानीपत की तीसरी लड़ाई हुई जिसमें जानको जी पकड़े गये और उन्हें अहमदशाह अब्दाली ने प्राण दण्ड दिया। इस लड़ाई से भारत में हिन्दू राज्य स्थापित करने की सम्भावना जाती रही।

पानीपत के युद्ध से महादाज़ी सिंधिया तो बच कर निकल गये परन्तु उनके पैर में ऐसी गहरी चोट लग गई जिससे वह समस्त जीवन लँगड़े बने रहे। रघुनाथ राव और बड़े मरहठा सरदारों का विरोध करते हुये भी पेशवा माधव राव ने महादाजी को उनकी जागीर का भार सौंप दिया। १७७४ ई० में महादाजी ने दिल्ली की ओर जाती हुई मरहठा सेना में १५००० सवारों के साथ सहायता दिया। १७६४-१७६६ ई० के मध्य उन्होंने मालवा में अपनी शक्ति की भली भांति नींव जमा ली। २१ अक्तूबर सन् १७७४ ई० को वारेन हेस्टिंग्ज की अध्यक्षता में बंगाल कौंसिल ने ब्रिटिश भारत का शासन अपने हाथ में लिया।

१७७५ ई० में रघुनाथ राव पेशवा (राघोबा) ने अँग्रेजों से सूरत में संधि किया। जिसके कारण मरहठा लोग बहुत नाराज हुये। १७७५-८२ ई० तक मरहठों

और अँग्रेज़ों में युद्ध होता रहा। इस बीच में सिंधिया को कई स्थानों पर अँग्रेज़ों से हार माननी पड़ी। दकन में जनरल गोडार्ड ने उसे परास्त किया। मालवा में मेजर पापहम ने सिंधिया की सेना को परास्त किया। फरवरी १८४० ई० में लहार का किला और अगस्त मास में ग्वालियर का किला अँग्रेज़ों के हाथ लगा। ग्वालियर का किला भारत भर में सबसे अधिक मजबूत माना जाता था। १८४१ ई० में मेजर कमक मालवा गया और सीपरी पर उसने अधिकार कर लिया परन्तु सिंधिया की सेना ने उसे बहुत परेशान किया जिसके कारण वह मज़बूर होकर महीदपुर चला गया। महीदपुर में उसे नई सेना तथा सामान मिला जिससे वह फिर लौट पड़ा। मेजर ब्रूस की सलाह से कमक ने सिंधिया की सेना को अच्छी तरह परास्त कर दिया। मालवा प्रदेश की हार के कारण सिंधिया की स्थिति शोचनीय हो रही थी और उसका नाम बदनाम हो रहा था। इधर सिंधिया के विरोधी होलकर की शक्ति बढ़ रही थी। उसने गोडार्ड को कई स्थानों में परास्त किया था।

महादाजी सिंधिया ने अँग्रेज़ों की बढ़ती हुई शक्ति

को देख कर उससे संधि करना लाभदायक समझा। इसलिये १७ मई, १७४२ ई० को सींधिया ने सालबाई स्थान में मरहठों से सुलह कर ली। इस संधि से सींधिया उज्जैन चले गये और अँग्रेज़ लोग जमुना नदी के उत्तर की ओर हट गये। सिंधिया को अँग्रेज़ों ने स्वतंत्र राज्य स्वीकार किया। इस संधि से सिंधिया पेशवा से अलग हो गये और अगले १२ वर्षों में उन्होंने अपनी शक्ति को खूब बढ़ाया।

सिंधिया ने डी ब्वायने (फ्रांसीसी जनरल) की सहायता से उत्तरी भारत पर अपना प्रभुत्व जमा लिया १७७३ ई० से १७८२ ई० तक मुगल साम्राज्य की शक्ति दिन प्रति दिन घटती रही। नजफ़ खां की मृत्यु के बाद से सिंधिया देहली दरबार के कारनामों को बैठे देखते रहे और अपने अवसर की प्रतीक्षा में थे १७४४ ई० में वह देहली बुलाये गये। उस समय शाह आलम दिल्ली का राजा था परन्तु राज्य की शक्ति अफ्रासियाब खां के हाथ में थी। इस निमंत्रण के पाने पर शीघ्र ही सिंधिया ने ब्वायने को बुंदेलखंड से बुलाया और एक बड़ी सेना के साथ वह आगरा की ओर रवाना

हुये और वहां जाकर मोगल सम्राट की सेना से मिला। सिंधिया के पहुँचने के तीन दिन बाद अफ़्रासियाब मार डाला गया। उसके मरने से सिंधिया उस समय वहां के मालिक हो गये। मोगल सम्राट ने सिंधिया को दिल्ली, आगरा और अलीगढ़ प्रान्तों के शासन की बागडोर दे दी। इस प्रकार सिंधिया उत्तरी भारत के शासक हो गये थे।

महादाजी सिंधिया और राजपूतों में भी बहुत दिनों तक युद्ध हुआ। रुहेले लोग भी सिंधिया के विरुद्ध लड़ते रहे परन्तु सिंधिया सदैव पेशवा के स्वामिभक्त सहकारी और शाह आलम के मित्र बने रहे। अँग्रेज़ों के हाथों की कठपुतली वह कभी नहीं बने। देश के अभाग्य से १२ फरवरी सन् १७६४ ई० को महादाजी की मृत्यु पूना में हुई।

शिवा जी को छोड़ महादाजी मरहठा सरदारों में सबसे अधिक वीर तथा बड़े राजा थे। यदि वह कुछ दिन और जीवित रहते तो वह ऐसा राज्य स्थापित करने में सफल होते जिसकी गणना भारत में बड़े राज्यों में होती। वह बड़े राजनीतिज्ञ तथा कुशल शासक थे।

भारत में उनका नाम राजों के मुँह पर था परन्तु वह काल षड्यंत्र तथा उपद्रव का था। दूसरे राजा और सरदार द्वेष भाव के कारण महादाजी का विरोध किया करते थे। जिससे उन्हें राज्य को संगठित करने में बड़ी कठिनाइयां हुईं।

महादाजी के कोई संतान न थी। उनके भाई तुकोजी के तीन पुत्र थे। पहले का नाम केदार जी, दूसरे का रत्रोल जी और तीसरे का आनन्द राव था। केदार जी बिना संतान के मर गये थे। रओल जी के दो पुत्र थे और आनन्द राव के केवल एक पुत्र था। आनन्द राव के पुत्र का नाम दौलत राव था। महादाजी ने अपने मरने से पहले ही दौलत राव को गद्दी देने का विचार प्रगट कर दिया था इसलिये लक्ष्मी बाई (महादाजी की स्त्री) के विरोध करने पर भी सिंधिया राज्य की गद्दी पर दौलत राव बैठाये गये। उनकी अवस्था केवल १३ साल की थी। उस समय ग्वालियर राज्य में मालवा का दो तिहाई भाग और सतलज नदी से इलाहाबाद के मध्य का प्रान्त शामिल था।

महाराज दौलत राव ने सबसे पहले कुर्दला के युद्ध

में भाग लिया। यह युद्ध १२ मार्च १७९५ ई० को हुआ। इस युद्ध में मरहठों ने निजाम को बुरी तरह से हराया। माधव राव के मरने पर पेशवा की गद्दी के लिये झगड़ा छिड़ा। सिंधिया का मन्त्री बालोब तांतिया बाजीराव को गद्दी पर बैठना चाहता था परन्तु नाना फड़नवीस उसका पहले विरोध कर रहे थे। कुछ षड्यंत्रों के बाद नाना फड़नवीस बाजी राव के सहकारी हो गये। इस पर पेशवा ने अहलद नगर तथा १० लाख की जागीर देकर सिंधिया को भी मिला लिया।

मार्च सन् १७९८ ई० को सर्जे राव की पुत्री बैजा बाई से दौलत राव का ब्याह बड़े समारोह के साथ हुआ उसी साल पूना दर्बार में दौलत राव को मार डालने का षड़यंत्र किया गया परन्तु पेशवा की हिम्मत मारने को नहीं पड़ी। नाना फड़नवीस बड़े कूटनीतिज्ञ थे। उनसे और दौलतराव से बहुत कम बनती थी।

मार्च १८०० ई० में नाना की मृत्यु हो गई तो सिंधिया का सामना करने वाला पूना दर्बार में कोई न रहा परन्तु इसी बीच सिंधिया के राज्य में यशवंत राव होल्कर लूट मार मचाये हुये था। वह उज्जैन की

ओर बढ़ा और अपनी सेना को एकत्रित करके उसे लूटने का प्रबन्ध किया। समाचार मिलने पर सिंधिया अपनी सेना ले उस ओर गये और होलकर को इन्दौर की ओर लौट जाना पड़ा।

कुछ दिनों के बाद होलकर पूना की ओर अपनी सेना लेकर रवाना हुआ। मार्ग में वह सींधिया के राज्य के जिलों को बर्बाद करता गया। २५ अक्तूबर १८०२ ई० को होलकर ने पूना के समीप सिंधिया और पेशवा के मिश्रित सेना को परास्त किया। पेशवा भय के मारे अँग्रेजों के पास चला गया और सहायता मांगी।

पेशवा और अँग्रेजों के बीच बसीन में संधि हुई। बसीन की संधि का समाचार पाकर सिंधिया और होलकर दोनों पेशवा से नाराज़ हो गये। उसके बाद अँग्रेज पेशवा की सहायता करते रहे और सिंधिया और होलकर से युद्ध होता रहा।

लासवारी के मैदान में परास्त होने के बाद ३० दिसम्बर को सुरजी अर्जुन गांव की संधि सिंधिया और अँग्रजों के मध्य हो गई। २२ नवम्बर १८०५ ई० को

संधि के बाद ग्वालियर और गोहाद नगर सिंधिया को लौटा दिये गये।

दौलतराव ने बड़ी वीरता के साथ अपने शत्रुओं को हराया। उन्होंने अपने राज्य को पंजाब तक बढ़ा लिया था। दिल्ली का राजा उनकी दी हुई पेंशन पर गुजर करता था। उन्हें अपनी सेना को सुधारने की बड़ी लगन थी और सेना संचालन तथा निरीक्षण के लिये फ्रांसीसी अफसर रक्खे गये थे। सिंधिया की सेना के सामने कई बार अँग्रेज़ी सेना को भी पीछे हटना पड़ा था। यदि फ्रांसीसी सैनिकों को अँग्रेज़ों ने अपनी ओर न फोड़ लिया होता तो भारतवर्ष का इतिहास कुछ और ही होता। वेलेज़ली की नीति ने सिंधिया महाराज के राज्य को बढ़ाने से रोक दिया था।

महाराज दौलत राव की मृत्यु १८२७ ई० में हुई उसके बाद जनकोजी राव नामक बालक गोद लेकर गद्दी पर बैठाया गया।

दौलत राव की स्त्री बैजा बाई जनको जी को नहीं चाहती थी। इसी कारण गद्दी के लिये झगड़ा हुआ। १८३२ ई० से लार्ड विलियम बैंटिंग ग्वालियर गये और

दोनों पक्षों की बातें सुनी। गवर्नर जनरल ने विवश होकर कहा कि जनकोजी को सहायता दी जावेगी। इसके बाद बहुत दिन तक झगड़ा होता रहा। अन्त में रानी को शान्त होकर बैठना पड़ा।

१८३३ ई० में ब्रिटिश सरकार ने ग्वालियर की सेना की संख्या घटा कर २ हज़ार सवार कर दिया।

७ फरवरी १८४३ ई० को जनकोजी राव की मृत्यु हो गई। उनके भी कोई संतान न थी। उनकी स्त्री ताराबाई (जिसकी अवस्था केवल १३ साल की थी) ने भागीरथ राव नामक ८ साल के बालक को गोद लिया जो जयाजी राव के नाम से गद्दी पर बैठा। मामा साहब उसके बचपन काल तक राज्य का सहकारी शासक बनाया गया।

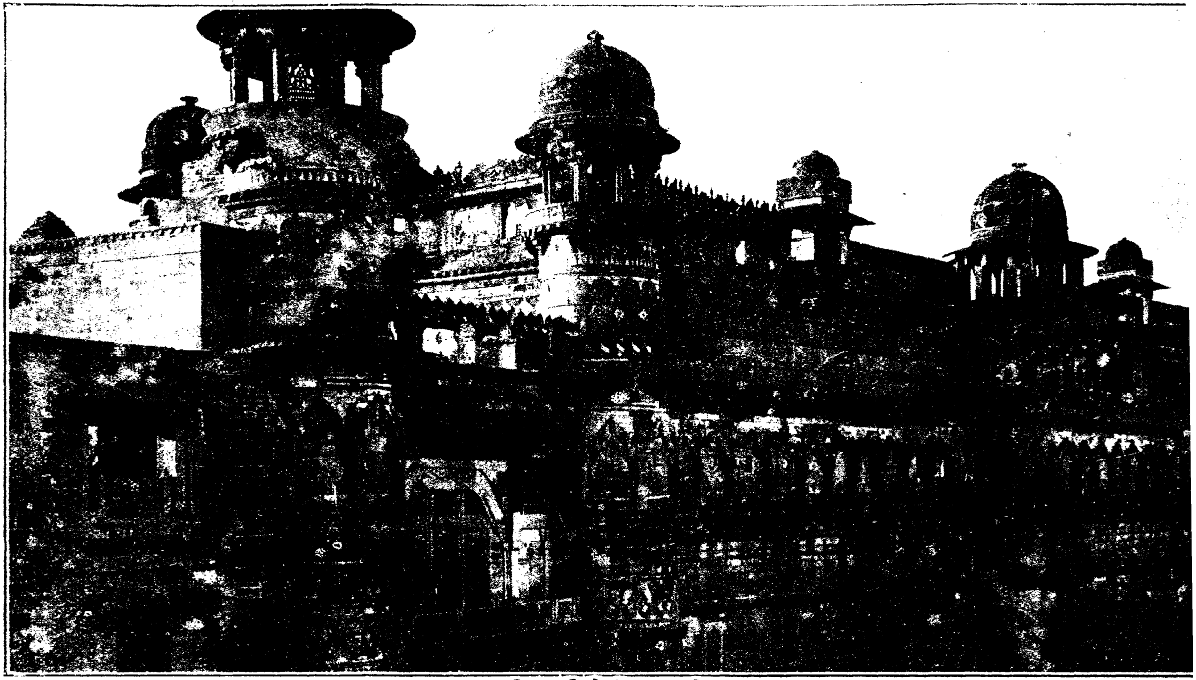
१६ मई १८४३ ई० को मामा साहब की पुत्री से जयाजी राव का व्याह हुआ और उसी समय मामा साहब दर्बार से निकाल दिये गये। उनके स्थान पर दादा खासगी वाला मन्त्री बनाये गये और राज्य की बागडोर महारानी ने अपने हाथ में ले ली। इसके बाद महाराज पुर और पनिआर की लड़ाइयां हुईं जिसमें सिंधिया की

सेना की हार हुई । १८४४ ई० में सिंधिया तथा ब्रिटिश गवर्नर जनरल के मध्य संधि हो गई।

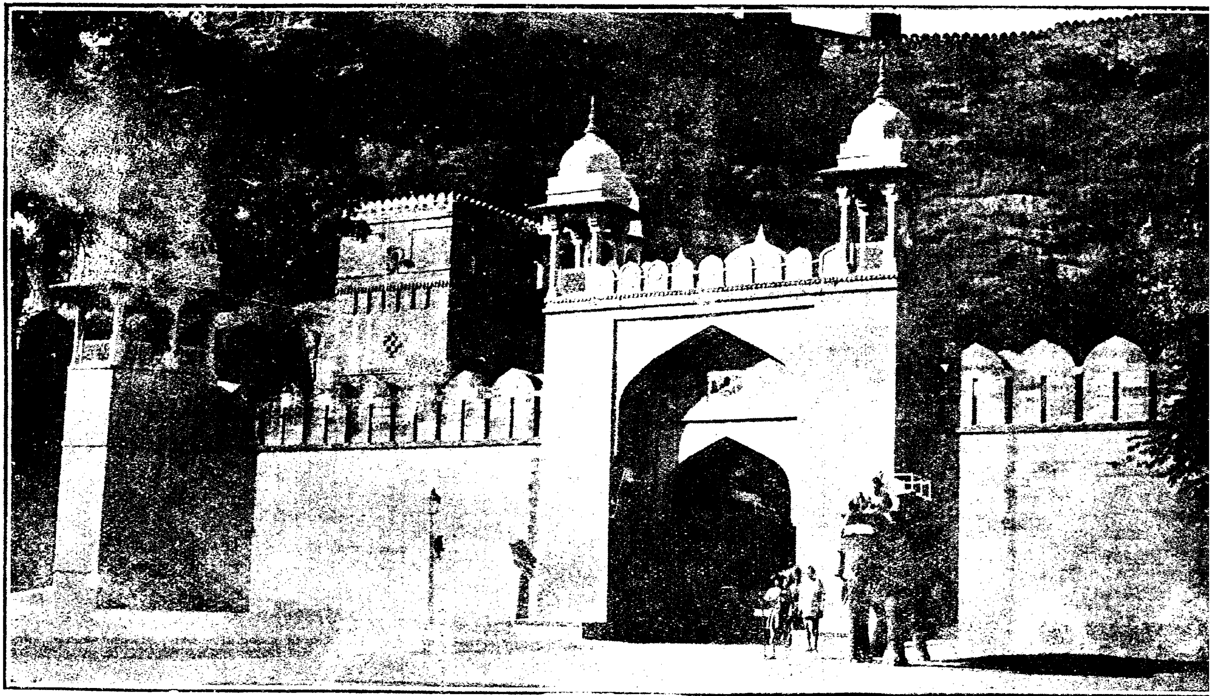
१८५३ ई० में महाराज को राज्य की बागडोर दे दी गई। उसी समय दिनकर राव राज्य के मन्त्री बनाये गये जो बाद को राजा सर दिनकर राव के० सी० एस० आई० के नाम से प्रसिद्ध हुये। यह बड़े चतुर और योग्य व्यक्ति थे। राजनीति में इनको काफी योग्यता प्राप्त थी।

१८५७ ई० में भारत के अन्दर गदर हो गया। उस समय ग्वालियर राज्य की सेना अँग्रेज़ी सरकार के विरुद्ध थी। सिंधिया राजा बिलकुल युवक थे परन्तु राज्य दर्बार में राजा दिनकर राव और अँग्रेज दूत मैक फरसन दो कड़े और योग्य पुरुष थे। इनकी सहायता से महाराज ने राज्य के अन्दर गदर नहीं होने दिया।

१४ जून को मोरार में ग़दर हो गया और राजदूत को विवश होकर आगरे भागना पड़ा। ३० मई को तांतिया टोपो और झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई ग्वालियर के सामने पहुँचे और उन्होंने सिंधिया राजा से ग़दर में शामिल होने के लिये कहा। जयाजी राव ने इंकार



ग्वालियर किले में मानमन्दिर



ग्वालियर फाटक

कर दिया और अपनी सेना लेकर उनका सामना करने जा डटा परन्तु उसकी सेना ग़दर करने वालों के साथ जा मिली। दिनकर राव और महाराज सिंधिया आगरा भाग कर चले गये।

१६ जून को सर लूग रोस ग्वालियर पहुँचे और दो दिन के युद्ध के बाद ग्वालियर और लश्कर पर अधिकार कर लिया। २० जून को सिंधिया महाराज फिर गद्दी पर बैठाये गये।

१८५६ ई० में दिनकर राव और राजा में झगड़ा हो गया। जिससे दिनकर राव ने स्तीफा दे दिया। १८६१ ई० में जयाजी राव को जी० सी० एस० आई० की उपाधि मिली और १८६२ ई० में सनद प्रदान की गई। १८७७ ई० में महाराज को २१ तोपों की सलामी का मान प्राप्त हुआ।

२० जून १८८६ ई० को जयाजी राव की मृत्यु हुई और माधो राव सिंधिया उनके स्थान पर गद्दी पर बैठे। उस समय माधो राव की अवस्था केवल १० साल की थी। १८६४ ई० में महाराज ने राज्य शासन की बागडोर अपने हाथों में ली।

महाराज ने राज्य को उन्नति देने में बड़ा काम किया। वह सदैव ब्रिटिश सरकार के भक्त बने रहे। १८६१ ई० में महाराज ने माधोराव मोहटे की पुत्री महारानी चिनकू से ब्याह किया था।

ग्वालियर के वर्तमान नरेश हिज़ हाईनेस महाराजा जयाजी राव सिंधिया हैं। आप का जन्म १६१६ ई० में हुआ। आप ने नवम्बर १६३६ ई० में राज्य-शासन की बागडोर अपने हाथों में ली। २९ वर्ष की अवस्था होते हुये भी आप के कार्य महान हैं। राज्य-प्रबन्ध के दैनिक कार्यक्रम के निरीक्षण तथा सारी प्रजा के लाभ और सुख के लिये नई योजनाओं को कार्य रूप में परिणत करने में आपने अपनी चतुरता और विद्वत्ता का अच्छा परिचय दिया है। आप के पास जब मन्त्रीगण कोई राज्यसम्बन्धी कार्य लेकर आते हैं तो आप एक अनुभवी शासक की भांति उस मामले की बड़ी कड़ी छानबीन करने के बाद अलग करते हैं। आफिस के कार्यों को करते समय आप की नज़र सख्त रहती है किन्तु बाहर आप सभों से स्वतंत्रता और प्रसन्नता के साथ भली भांति मिलते जुलते हैं। इन्हीं कारणों से भारतीय राज्यों में

आप का मान राज्य के अन्दर और बाहर सर्वश्रेष्ठ है। आप के साथ ग्वालियर में एक नये युग का प्रवेश हुआ है। आप अपने पिता के सुयोग्य पुत्र हैं और उनके आरम्भ किये हुये कार्यों की पूर्ति बड़ी सावधानी से कर रहे हैं। ग्वालियर को ऐसे शासक पाने का बड़ा गर्व है।

महाराजा सिंधिया के अधिकार राज्य में सर्वोपरि हैं किन्तु इन अधिकारों का प्रयोग कानून बनाने वाली, शासन करने वाली तथा न्याय करने वाली संस्थाओं द्वारा होता है। राज्य का शासन आठ भागों में विभाजित है और प्रत्येक विभाग एक मन्त्री के आधीन है। कानून बनाने वाली एक सभा है जिसमें प्रजा के चुने हुये और राजा के नामजद किये हुये मेम्बर हैं। इस सभा में प्रजा के प्रतिनिधियों की संख्या अधिक है अभी हाल ही में महाराजा ने इस सभा में और अधिक सुधार करने के लिये आज्ञा निकाली है जिससे सभा के अन्दर प्रजा के चुने हुये मेम्बरों की संख्या बढ़ जायगी और साथ ही साथ जिम्मेदारी भी अधिक हो जावेगी।

इस प्रकार ग्वालियर नरेश ने स्वयं अपनी प्रबल इच्छा से अपने पांव प्रजातंत्र राज्य की ओर बढ़ाया है।

यह बात उसके बिल्कुल विपरीत है जैसा कि और दूसरे राज्यों में होता है कि प्रजा अपने अधिकारों को मांगती है। यहां तो स्वयं राजा ने ही प्रजा के अधिकारों को जान कर बिना मांगे सौंपना आरम्भ किया है। ग्वालियर राज्य में बेकारी दूर करने के लिये सिविल सर्विस को और अधिक तगड़ा बनाया जा रहा है। हाल ही में ग्राम-समाज-सुधार के लिये महाराज ने एक करोड़ रुपया प्रदान किया है। ग्राम सुधार के लिये एक योजना बनाई गई है और निरक्षरता को दूर करने के लिये गांव गांव में शिक्षा देने का प्रबन्ध हो रहा है।

महाराज शिकार खेलने के बड़े शौकीन हैं। आप एक उत्साही तथा वीर पुरुष हैं। आप को २१ तोपों की सलामी दी जाती है।

श्रीमन्त सरकार जीवाजी राव शिन्दे ने विजया-दशमी, ता० ३ सितम्बर सन् १९४१ को एक घोषणा की है जिसका सारांश नीचे दिया जाता है।

१—ग्वालियर राज्य के भू-प्रदेश के शासन से सम्बन्धित तथा आनुषंगिक सम्पूर्ण शक्तियां तथा उक्त भू-प्रदेश में प्राप्त सब स्वतंत्र अधिकार तथा न्यायाधिकार

महाराज में निहित हैं और उनके द्वारा एवं उनके नाम में प्रयोगनीय हैं।



श्रीमन्त सरकार महाराज जीवाजी राव शिन्दे

राज्य से और उसके शासन से सम्बन्धित राज्य नियम-निर्माण प्रबन्ध तथा न्यायाधिकार सम्बन्धी सम्पूर्ण

शक्तियां इसके विपरीत किसी विधान के होते हुये भी महाराज में अन्तर्हित और उनके द्वारा अधिकृत तथा सुरक्षित हुई एवं सदैव से रही उद्घोषित की जाती हैं और किसी भी विधान की कोई बात उनके नैसर्गिक अधिकारों के कारण राज नियम निर्माण करने और उद्घोषणाएँ, आज्ञायें तथा विशेषाज्ञायें प्रचलित करने, उनके स्वत्व और विशेषाधिकार पर न तो कोई प्रभाव डाल सकती है और न उसका ऐसा तात्पर्य ही समझा जा सकता है।

ग्वालियर की समस्त प्रजा और उसके निवासियों को चाहे वह किसी भी धर्म अथवा मत के हों, अपने विश्वास के अनुसार अपना धर्म मानने की पूर्ण स्वतंत्रता है परन्तु इस स्वत्व के प्रयोग में कोई व्यक्ति ऐसा कार्य नहीं कर सकता जो राज्य में प्रचलित किसी राज्यनियम के विरुद्ध हो।

उपरोक्त घोषणा के अनुसार राज्य में भाषण और प्रकाशन की स्वतंत्रता दी गई परन्तु इस सुविधा के प्रयोग में यह मनाही की गई कि कोई भी व्यक्ति ऐसा भाषण या कृत्य न करे जो राज्य में प्रचलित राज-नियम के अनुसार राज्य की सुरक्षता और शान्ति स्थिरता को संकट में डाल दे।



ग्वालियर राज्य में विविध प्रकार की धार्मिक, नैतिक, सामाजिक, बौद्धिक, धार्मिक और राजनैतिक संस्थाओं को विकसित करने के लिये संघ स्थापित हो सकेंगे परन्तु ऐसा कोई संघ स्थापित न हो सकेगा जो ग्वालियर या उसके मित्रवर राज्यों के शासन, सुरक्षा, शान्ति और स्थिरता को हानिकारक हो।

व्यवस्थापक-मंडल की दो सभायें होंगी जिसमें नीचे वाली सभा प्रजा सभा कहलावेगी। प्रजा सभा के सदस्यों की पूर्ण संख्या ९० होगी।

इस सभा में निर्वाचित सदस्यों की संख्या ५० से ५५ कर दी गई है। ३५ व्यक्ति नियोजित होंगे जिनमें से राज्याधिकार २५ से अधिक न होंगे। उच्च सभा का नाम "राजसभा" रक्खा गया है। इसमें ४० सदस्य होंगे जिनमें २० निर्वाचित और २० नियोजित सदस्य होंगे। नियोजित सदस्यों में राज्य सेवक सदस्य १२ से अधिक न हो सकेंगे।

व्यवस्थापक मण्डल के अधिकार सीमा वाले सभी प्रस्ताव सभाओं के सामने प्रस्तुत किये जा सकेंगे परन्तु कोई भी प्रस्ताव व्यवस्थापक मण्डल द्वारा स्वीकृत नहीं

माना जावेगा जब तक कि उस पर दोनों सभाओं ने अपनी सहमति न दे दी हो। कोई भी सभाओं द्वारा स्वीकृत प्रस्ताव विधान न बन सकेगा जब तक उस पर महाराज के हस्ताक्षर न हो जावें।

अल्पसंख्यक लोगों को दोनों व्यवस्थापक सभाओं में स्थान दिया गया है। मुसलमान, भिल नीची जातियों और स्त्रियां आदि वर्गों का खास तौर पर ध्यान रक्खा गया है। मुसलमानों को प्रजा-सभा में ७ और राजसभा में २ स्थान दिये गये हैं। यदि अचानक उनका चुनाव न हो सका तो महाराज स्वयम् उनकी नियुक्ति करेंगे।

वोटर जो लोग २०) या इससे अधिक लगान देते हैं, १२ आना प्रति वर्ष घर का कर देते हैं या कम से कम १८ रु० सालाना किराया मकान देते हैं वही प्रजा मंडल के सदस्यों को निर्वाचित कर सकेंगे।

राज-सभा के वोटर २०० रु० प्रति वर्ष के माल-गुज़ार या १२ रु० सालाना टैक्स देने वाले या १२०रु० सालाना किराया मकान देने वाले लोग ही वोट (मत, राय) दे सकते हैं।



राज्य की प्रसिद्ध नदियाँ

ग्वालियर राज्य में छोटी छोटी नदियाँ बहुत हैं। अहेली महरवानी बन से निकलती है। यह शिवपुर ज़िले में ५८ मील बह कर गुनौदा के समीप पार्वती से मिलती है। इसके किनारे बगल्दा, ललतपुर और अलपुर नगर हैं।

ऐरापत :—इन्दौर से निकलती है। यह ईसा गढ़, कोलरस और पिछौर ज़िलों में २५ मील तक बहती है इसके बाद कैनवह के समीप पठार की सिंध नदी से मिलती है।

अमराल :—पिपरानी से निकलती है और शिवपुर ज़िले में २४ मील बहने के बाद राजपुर में सिप से मिलती है।

अन्देरी नदी :—बरखोअ के समीप एक कन्दरा से निकलती है और कुम्भराज परगना में १६ मील बहने के बाद कोटा राज्य में प्रवेश करती है।

अस नदी :—गुगरखी के समीप से निकलती है और इसागढ़ परगना में २०मील बहने के बाद रसल-

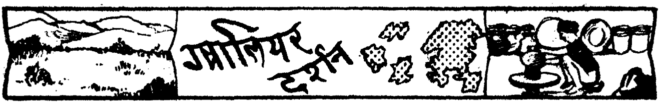
बुज़ुर्ग के समीप क्वोच से मिलती है। इसके तट पर पिपरी और हसनपुर गाँव है।

अमन नदी :—पगोरा से निकलती है। यह नदी जोर, नूरबद और अम्बद परगने में ८० मील बहती है। यह खेरा स्थान पर कुनबरी नदी से मिलती है। इसके किनारे कोतवल और ऐनो दो प्रसिद्ध स्थान हैं। इस नदी पर तीन रेलवे के पुल हैं।

अयू नदी :—अनवर स्थान से निकल कर २६ मील तक अगर और सुसनेर परगने में बहती है। इसके बाद टोंक राज्य में प्रवेश करती है।

बाद नदी :—भोपाल राज्य से निकल कर ग्वालियर राज्य में प्रवेश करती है। यह बसोद परगने में २५ मील तक बह कर जोहद के समीप बेतवा नदी से मिलती है। इसके किनारे बेरखेरी, पिपरी, गुजरखेरी और खजूरी कनरी स्थान हैं।

बैसलि नदी :—पिछोर में दंग स्थान से निकलती है। यह गिर्द ग्वालियर, गोहद, महगाँव और भिंड परगने में ६४ मील बहती है और उदानपुर में सिंध से मिलती है। नरौली और गोहद इसके किनारे मुख्य स्थान हैं।



बेतवा नदी :—भोपाल राज्य से निकल कर पररीय स्थान पर ग्वालियर राज्य में प्रवेश करती है। भिल्सा, बसोद, मुंगोली और पिछोर परगने में यह १२३ मील तक बहती है। हमीरपुर के पास यह नदी जमुना से मिलती है। इस नदी पर कई स्थानों पर सड़कों के पुल बने हैं। इसके किनारे पर भिल्सा, भौनरस और मलहरगढ़ मुख्य स्थान हैं।

बिलरई नदी :—बिलरई स्थान से निकलती है। यह पिछोर और करेरा परगना में २२ मील तक बहती है। यह महुवर नदी में गिरती है। रामनगर स्थान पर सिपरी-झांसी सड़क इसे पार करती है। इसके किनारे रामनगर और बहादुरपुर मुख्य स्थान हैं।

चम्बल नदी :—इन्दौर राज्य से निकल कर ग्वालियर राज्य में प्रवेश करती है। यह दिगथान जागीर, बड़नगर, उज्जैन, खचरौद, नहरगढ़, जोर, अम्बर और भिंड परगनों में १५० मील तक बहती है। यह नदी यमुना में गिरती है। इसके किनारे भिरवद और बड़नगर मुख्य स्थान हैं।

छोटी काली :—सिंध नदी देवास राज्य से निकल कर

ग्वालियर राज्य में प्रवेश करती है। यह सोनकच, उज्जैन और अगर परगने में २५ मील तक बहती है और चम्बल में गिरती है।

चुम्बल नदी :—धार राज्य से निकल कर सकलोना स्थान पर ग्वालियर राज्य में प्रवेश करती है। यह मद-गानी स्थान पर चम्बल से मिलती है।

चोच नदी :—बड़गाँव के समीप से निकलती है और इसागढ़ परगने में २५ मील तक बहती है। यह सिंध से मिलती है।

दबराज नदी :—भदौरा राज्य से निकल कर ग्वालियर राज्य में प्रवेश करती है। यह बजरङ्गगढ़ परगने में २७ मील बह कर रमपुरिया के समीप पार्वती नदी से मिलती है। इसके किनारे करमद जागीर और मिरबाड़ा मुख्य स्थान हैं।

दोनी नदी :—चोरेक बन से निकल कर विजयपुर में २१ मील तक बहने के बाद खेरोद के समीप चम्बल से मिल जाती है। इस नदी पर सड़कों के पुल बने हैं। तर्रा कुलन तर्रा, खुर्द और सुखवस इसके किनारे मुख्य स्थान हैं।

गम्भीर नदी :—इन्दौर राज्य से निकल कर हंस खेरी के समीप ग्वालियर राज्य में प्रवेश करती है। यह उज्जैन और खचरौद परगनों में ३३ मील तक बहती है। यह सिपरा नदी से मिलती है। भोपाल-उज्जैन रेलवे इसे पार करती है। इसके किनारे खेमस और अरोलिया तेवरा मुख्य स्थान हैं।

काली सिंध नदी :—बगली से निकल कर अश्वोद के समीप ग्वालियर राज्य में प्रवेश करती है। यह सोनकच और नलखेश परगनों में १५२ मील तक बहती है और चम्बल से मिल जाता है। इस नदी में कई स्थानों पर सड़कों के पुल बने हैं। तरवल और सोनकच इस नदी के किनारे मुख्य स्थान हैं।

कंथाली नदी :—अकलि से निकलती है और मुसनेर परगनै में २७ मील बहती है और काली सिंध में मिल जाती है।

केवतन नदी :—इन्दौर राज्य से निकल कर पंथ पिपलई के समीप ग्वालियर राज्य में प्रवेश करती है। यह बसोद परगने में ३० मील तक बहने के बाद बेतवा नदी से मिल जाती है।

कूनो नदी :—उमरी राज्य से निकल कर रिकोर के समीप ग्वालियर राज्य में प्रवेश करती है। यह कोलरन, पौरी जागीर, शिवपुर और विजयपुर परगनों में ६४ मील तक बहती है और चम्बल से मिलती है। इस नदी पर सड़क तथा रेल के पुल हैं। सिहोरा, छरज, सिलोरी और महतोनी आदि मुख्य स्थान इसके तट पर हैं।

कँगवारी :—देवपुर से निकलती है और पौरी जागीर में १८७ मील तक बहती है। पौरी और भतनवर इसके किनारे मुख्य स्थान हैं। राज्य के अन्दर इस नदी की लम्बाई सबसे अधिक है।

लखूदर नदी:—जमोनो से निकलती है। यह सोन कच, शाजापुर और नलखेश परगनों में ४६ मील तक बहती हुई तखला स्थान पर काली सिंध नदी से मिलती है। इस नदी को भोपाल-उज्जैन रेलवे तथा अगर-सरंग-पुर सड़क पार करती है।

लोद्री नदी :—देवास राज्य से निकल कर ग्वालियर राज्य में प्रवेश करती है। यह सोनकच परगने में ३४ मील तक बहती है। खमखेड़ा स्थान पर कालो सिंध से मिलतो है। देवास-सोनकच सड़क इसे पार करती है।

चोबर, सुदर्सी और सुरखेरी इसके किनारे के मुख्य स्थान हैं।

महुवर :—सरस्त्रती के ममीप से निकलती है और पिछोर तथा करेर परगनों में ५६ मील तक बहती है। यह पछोर के समीप सिंध से मिलती है। इसके किनारे करेर मुख्य स्थान है।

मोरार :—यह नदी बरोरी के ताल से निकलती है और गिर्द ग्वालियर में २७ मील तक बहती है। यह बैसेली नदी से मिलती है। इसे जी० आई० पी० रेलवे लाइन पार करती है। इसके किनारे अलापुर और मोरार नगर है।

नरेन नदी :—घाघर से निकलती और बसोद परगने में ६१ मील तक बह कर सरहेरा के समीप बेतवा से मिलती है।

नेवज नदी :—जवर से निकलती है और सोन कच तथा शुजालपुर परगनों में ४४ मीत्र तक बहती है। इसके किनारे बनखेरी और मानघाट नगर हैं। भोपाल-उज्जैन रेलवे इसे पार करती है।

ओर नदी :—अमखेरा के समीप से निकलती है

और राज्य के अन्दर ३५ मील तक बहती है। यह बेतवा नदी से मिलती है। इसके किनारे तुमलन कलन मुख्य स्थान है।

पहूज :—दतिया राज्य से निकल कर पुर स्थान पर ग्वालियर राज्य में प्रवेश करती है। यह भंसदेर और लहर परगनों में ६६ मील तक बहती है। इसके किनारे भंदेर मुख्य नगर है।

पार्वती (पूर्वी) :—सिघन ताल से निकलती है और राज्य के अन्दर सिपरी, मौरी जागीर, विजयपुर, मसतुर और पहरगढ़ जागीर में ८४ मील तक बहती है इसके बाद भवैय स्थान पर सिंध से मिलती है। इसके किनारे तिकतोली, गुजर, कोतवल, अछवड़ और भितरगढ़ आदि मुख्य स्थान हैं।

पार्वती (पश्चिमी) नदी :—भोपाल राज्य से निकल कर बमोलिया मोचली के समीप ग्वालियर राज्य में प्रवेश करती है। शुजालपुर, बजरङ्गगढ़, शिवपुर और बरौदा जागीर में ३३ मील तक बहती है। यह पतरद के समीप चम्बल में गिरती है। इसके किनारे उत्तनवाड़ा और जलालपुर मुख्य स्थान हैं।

पठार नदी :—मेनाबासी से निकलती है और राज्य के अन्दर जोर परगना में २७ मील तक बहती है। संगोली स्थान पर असन नदी से मिलती है। तिकतोली गुज़र इसके किनारे मुख्य स्थान है।

रेन्दी नदी :—सिघनवस ताल से निकलती है। सिपरी और पौरी जागीर में ३० मील तक बह कर तिगरा स्थान पर चम्बल में गिर जाती है।

समैन नदी :—इन्दौर राज्य से निकल कर जऊरी स्थान पर ग्वालियर राज्य में प्रवेश करती है। यह लहर परगने में १६ मील तक बहती है और सुर स्थान पर पहुज से मिल जाती है।

सांख:—सिकरौली के ढंग से निकलती है। ग्वालियर राज्य के अन्दर ४० मील तक बहती है। काशीपुर के समीप सिप से मिल जाती है। इस नदी पर सड़क तथा रेलवे के पुल हैं।

शिप्रून परताबगढ़ राज्य से निकल कर ग्वालियर राज्य में आती है। भूगढ़ और मंदसोर परगनों में ४२ मील तक बहती है। पियाखेरी स्थान पर चम्बल से मिलती है। बम्बई-बड़ौदा और सेन्ट्रल इंडिया रेलवे का पुल इसी नदी पर बना है।

देश दर्शन

सिंध :—नैनवस ताल से निकल कर तोरपुर के समीप ग्वालियर राज्य में प्रवेश करती है। ग्वालियर राज्य के अन्दर यह नदी ६२ मील तक बहती है। इसके ऊपर रेल तथा सड़कों के कई स्थानों पर पुल बने हैं। इसके तट पर धूमेश्वर, नरवर और पवय आदि मुख्य स्थान हैं।

सीप नदी :—पनवाड़ा से निकलती है। यह शिवपुर और विजयपुर परगनों में ५३ मील तक बहती है। फेट-पुर में चम्बल नदी से मिल जाती है। इसके किनारे मानपुर, मेवाड़, शिवपुर और सोहन गाँव हैं।

सिप्रा :—इन्दौर राज्य से निकल कर नोबकली स्थान पर ग्वालियर राज्य में प्रवेश करती है। यह नदी उज्जैन और खचरौद परगनों में १८० मील तक बहती है इसके बाद चम्बल नदी से मिल जाती है। इसके किनारे पर उज्जैन और नरोंगढ़ दो मुख्य स्थान हैं।

तिलार :—खँडरखेरी से निकलती है और ग्वालियर राज्य में २४ मील प्रवाह करने के बाद लंखदर में गिरती है।

अपरेनी :—उमरी राज्य से निकल कर ग्वालियर राज्य में प्रवेश करती है। बजरंगगढ़ परगने में यह २५ मील



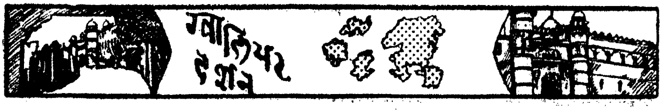
तक बहती है। लखमखेरी के समीप यह नदी पार्वती नदी से मिल जाती है। मगरोर, तनवर और फतेहगढ़ इसके तट पर प्रसिद्ध नगर हैं।

इनके सिवा बधैर, बघई, बैस, बमोरी, बनास, बन्दई, बाबन, बेटिल, भैंसुवा, भारन, भिलारई, बिलास, बोरखेरी, बोर्नी, बुर्द, चपारी, चनकेश्वर, चौली, द्वार, चोरापछार, गिर, गुजालिया, गुञ्जारी, गुरई, इधार, इन्दार, कदवल, कलहारी, कपुरन, करई, कसनाई, केथन, खान, खनेवे, खरदिया, खरेरी, कोंच, कोंचल, मन्हो, मह, महुअर, मान, मोल, मोरार, नाग्दी, नर्बदा, नेग्रो, नेमन, पारम, परास्री, पिंग्ल, राची, रेतम, रेप, रेन्नी, रोज़री, सागर, सहोद्रा, सालिया, सेंदुवा, सिंद, सोब, सोम्लो, स्वर्णरेखा, सूख, टाँडा, त्रिबेनी, तुमर, तुमेन आदि ग्वालियर राज्य में दूसरी छोटी छोटी नदियाँ हैं। ग्वालियर राज्य में छोटी बड़ी सब नदियाँ मिलाकर १८१ हैं। इनमें से कोई कोई तो केवल ५ या ६ मील ही लम्बी हैं। यह नदियाँ अधिकतर पहाड़ी हैं और केवल वर्षा ऋतु में ही पानी रहा करता है।

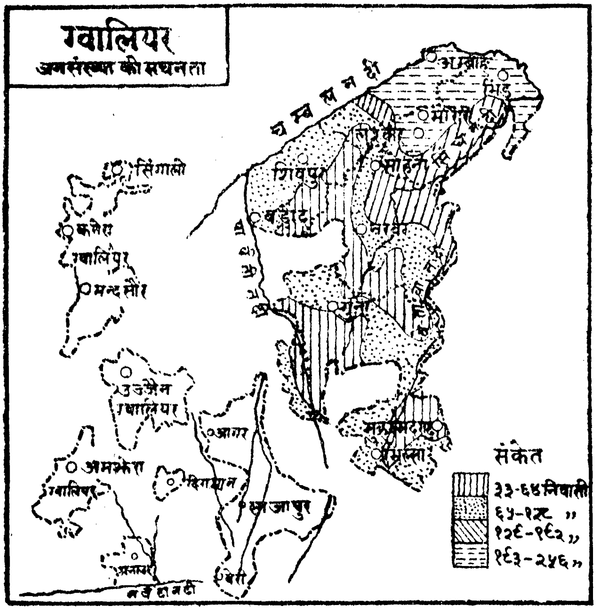
जनसंख्या, धर्म और भाषा

ग्वालियर राज्य की जन-संख्या ३५,२३,०७० है। राज्य में ९,३६५ टाऊन तथा लगभग दस हजार गांव हैं। ग्वालियर राज्य में कुछ गिने चुने ही ऐसे नगर हैं जिनकी जन-संख्या दस हज़ार से अधिक है। राज्य की राजधानी लश्कर में है। लश्कर की जन-संख्या दस हज़ार से कुछ ही अधिक है। उत्तरी ग्वालियर में लश्कर, ब्रिगेड, ग्वालियर और मोरार आदि नगर एक दूसरे से लगभग ४ मील की दूरी पर ही स्थित हैं। मालवा में १६ नगर हैं। यह नगर समस्त मालवा प्रदेश में बिखरे हुये हैं। नगरों में समस्त जन-संख्या का केवल ११ प्रतिशत भाग स्थित है।

समस्त जन-संख्या का ८९.९१ प्रतिशत भाग राज्य के भीतर ही उत्पन्न हुआ है। जन-संख्या का ३.८६ प्रतिशत भाग दूसरे एजेन्सियों से आकर राज्य में बसा है। ब्रिटिश भारत से आकर बसने वालों में संयुक्त प्रान्त आगरा व अवध के लोग अधिक हैं। राज्य में मर्दों की संख्या स्त्रियों से कुछ ही अधिक है।



ग्वालियर राज्य में समस्त जन-गणना का ८४ प्रति शत भाग हिन्दुओं का है। वहां ६ प्रतिशत मुसलमान,



२ प्रतिशत जैनमत वाले हैं। ईसाइयों की जन-संख्या एक हज़ार के लगभग है।

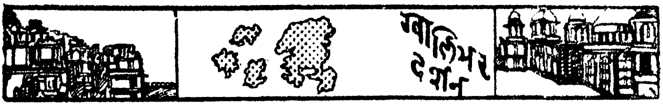
ग्वालियर राज्य में कनैडा के प्रेस्बिटेरियन चर्च वाले धर्म प्रचार का काम कर रहे हैं। जिनका काम उज्जैन

नीमच, नगरों तथा जावद नगर के बाहरी भाग में हो रहा है। यह लोग अपनी संस्था की ओर से स्कूल तथा अस्पताल भी चला रहे हैं।

राज्य के हिन्दुओं में सबसे अधिक स्मार्त मतवाले उसके बाद वैष्णव मतवाले, फिर शिव के पुजारी और उसके बाद और दूसरे छोटे मतों के मानने वाले हैं।

राज्य में दो मतों के प्रचार का जिक्र करना आवश्यक है एक तो बाबा खुबत का मत है। बाबा खुबत जात के धोबी थे। यह नरवर ज़िले के निवासी थे। कहते हैं कि उनमें यह शक्ति थी कि वह अपने को किसी भी रूप में बदल सकते थे एक बार वह शेर बन गये और उन्होंने अपनी स्त्री को खा लिया। धोबी और नीची जाति वाले लोग उन्हें देवता मान कर उनकी पूजा करते हैं। दूसरा मत कारसदेव का है। इस मत को मानने वाले राज्य में लगभग ५ हज़ार हैं। गूजर और अहीर लोग कारसदेव को अधिक मानते हैं।

मुसलमानों में सुन्नी लोगों की संख्या लगभग डेढ़ लाख और शिया लोगों की लगभग तीस हज़ार है। मुसलमानों के बीच में बाबा कपूर का मत प्रचलित है।



जिसे हिन्दू लोग भी मानते हैं। मुंतखाबुल तवारीख नामक पुस्तक के अनुसार बाबा कपूर (शेख कपूर) हुसैनी सैय्यद थे। वह पहले एक सैनिक थे। बाद को वह धार्मिक हो गये और अपनी नौकरी छोड़कर गुफा में रहने लगे थे।

जैन लोगों में दिगम्बरों की संख्या श्वेताम्बरों से अधिक है। घुन्दिअस लोग कम हैं।

ग्वालियर राज्य के निवासी २६ प्रकार की भाषाएँ बोलते हैं। सबसे अधिक मालवी भाषा के बोलने वाले हैं। मालवी भाषा के बाद हिन्दुस्तानी भाषा के बोलने वाले हैं। बुन्देलखण्डी भाषा के बोलने वाले भी काफी लोग हैं।

मालवी भाषा के बोलने वाले ६६ प्रतिशत लोग पठारी प्रान्त में रहते हैं। बुन्देलखण्डी भाषा बोलने वाले ग्वालियर के पूर्व और उत्तर-पूर्व रहते हैं। ग्वालियर के उत्तर-पश्चिम की ओर जादोमती, तोंवरगढ़ी और सिकर वाड़ी भाषा बोली जाती है।

राज्य में हिन्दी, उर्दू, मराठी, अँग्रेज़ी आदि भाषाओं की शिक्षा प्रदान की जाती है। हिन्दी के पढ़ने वालों की संख्या सबसे अधिक है। राज्य में कुल लगभग ३ फी सदी लोग शिक्षित हैं।

उद्योग-धंधे

राज्य के अधिकांश निवासी खेती और चराई आदि के काम में लगे हैं। ब्राह्मण, ठाकुर (क्षत्रिय) और राजपूत लोग खेती पर निर्भर नहीं हैं। यह लोग अपने हाथ से हल की मुठिया पकड़ना दोष समझते हैं। इसलिये हल जोतने के लिये यह लोग नीच जाति वालों को नौकर रखने हैं। खेती के सिवा और दूसरे कार्यों तथा नौकरी पर निर्भर करने वालों की जनसंख्या लगभग १६ लाख है।

घरेलू काम करने वाले नौकरों की संख्या २ लाख ६८ हज़ार है। साग तरकारी की उपज करने वालों की संख्या लगभग २५ हज़ार है। जलाने की लकड़ी और घास के रोज़गार में लगे लोगों की संख्या १४६८३ है। ८७,६७० व्यक्ति सूती कपड़ा तयार करने में लगे हैं। रुई की सफाई, धुनाई, सूत कातने और बुनने का काम राज्य के अन्दर होता है।

राज्य में १२६२४ दर्ज़ी (कपड़ा सीने वाले) हैं जो लोगों को पहिनने के लिये कपड़ा तयार करते हैं।

सोने के ज़ेवर और बहुमूल्य पत्थर के काम बनाने वालों की संख्या १३,१४२ हैं। लोहा और दूसरी धातुओं के काम करने वालों की संख्या १५,४२४ है। मिट्टी तथा पत्थर के बर्तन तथा सामान तयार करने के रोज़गार में ३०,०८५ मनुष्य लगे हैं। राज्य में १४ हज़ार बढ़ई हैं जो लकड़ी का सामान तयार करते हैं। झाड़ू, चटाई, टोकरी आदि के रोज़गार में लगभग ८ हज़ार मनुष्य लगे हैं।

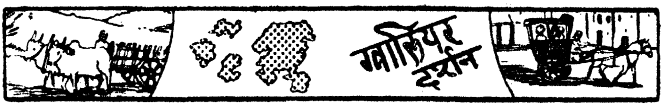
जूते, चप्पल आदि बनाने में ५७,५३१ आदमी लगे हैं। यह लोग चमड़े के संदूक और दूसरे सामान भी तयार करते हैं। व्यापार में लगे लोगों की संख्या ८८,६७७ है।

पुजारी और मन्दिरों में काम करने वालों की संख्या २६०२ है। नाच-गान तथा संगीत विद्या में ५०६३ लोग लगे हैं जिनमें नाच गाने और स्वाँग भरने वाले सभी लोग हैं। यह अधिकतर ग्वालियर और भिंड ज़िलों में पाये जाते हैं।

ग्वालियर राज्य का प्रधान कारबार सूती कपड़ा

हैं। उज्जैन में १८१८ ई० में एक सूती मिल स्थापित की गई थी। चन्देरी में बड़ा बढ़िया कपड़ा बनता है। मन्दसोर में कपड़े की छपाई अच्छी होती है। ग्वालियर शहर में चीनी मिट्टी के बर्तन अच्छे तयार होते हैं। शिवपुर की लकड़ी की खरीद और रँगाई मशहूर है।





सामाजिक अवस्था

राज्य के समाज में गत ५० वर्षों में बहुत कुछ परिवर्तन हो गया है। पश्चिमी शिक्षा का प्रभाव राज्य के पहिनाव, दैनिक जीवन, भोजन और ब्याह आदि पर पड़ा है। राज्य में परिवर्तन होने का मुख्य कारण लोग यही बतलाते हैं कि "यथा राजा तथा प्रजा" अर्थात् जैसा राजा होता है वैसा ही प्रजा को भी बनना पड़ता है।

राज्य के हिन्दू जिन पर नवीन सभ्यता का प्रभाव नहीं पड़ा वह धोती, मिर्ज़ई और बंडी पहिनते हैं। सिर पर साफा या पगड़ी बांधते हैं। अंगरखा, पायज़ामा और चंगोशी का भी प्रयोग होता है। अब नगरों में लोग कोट, पाइंट, हाफ पाइंट, मोज़ा, ब्रोचेज़, कमीज़, कालर आदि का प्रयोग करते हैं। साफा का प्रयोग सभी लोग करते हैं।

गांवों और नगरों के गरीब लोग धोती पहिनते हैं। उत्तरी ग्वालियर में लाल या गेरुए रंग से रंग कर धोती पहिनी जाती है। ग्वालियर में मिर्ज़ई पहिनने, साफा

बांधने का और मालवा में बंडी पहिनने और पगड़ी बांधने का रिवाज़ है। यह सामान खादी से तयार किये जाते हैं। ग्वालियर और मालवा दोनों प्रदेशों में देशी देहाती चमड़े का जूता पहिना जाता है। बुन्देलखण्ड के जूतों का भी प्रयोग होता है। यह जूते आगे और पीछे की ओर अधिक ऊँचे होते हैं।

अमीर लोग अच्छे बारीक कपड़े की धोती पायजामा हाफ पाइन्ट, भांति भांति के साफों, पगड़ी और पश्चिमी जूतों का प्रयोग करते हैं। पुराने बृद्ध लोग कंधों पर डुपट्टा रक्खे रहते हैं। नवीन सभ्यता पर चलने वाली नवीन संतान साफा के स्थान पर टोपी लगाना अधिक पसन्द करती है। नगरों में अँग्रेज़ी पहिनावे का रिवाज अधिक है। अंग्रेज़ो तरीके से सभी लोग बाल बनवाते हैं।

मालवा और उत्तरी ग्वालियर की स्त्रियाँ रंगीले लहँगे और चोली पहिनती हैं। मालवा में चोली को काँचली कहते हैं। सिर और कंधों को ढकने के लिये ओढ़नी का प्रयोग होता है। बुन्देलखण्ड की ओर स्त्रियाँ रंगीन धोतियां और साड़ियां पहिनती हैं।

उत्तरी ग्वालियर में लोग साधारण तौर पर तीन



बार भोजन करते हैं। प्रातः काल काम में जाने के पहले कलेवा खाते हैं। उसके बाद दोपहर और शाम को भोजन करते हैं। दोपहर और संध्या समय के भोजन को बिआरू या बियारी कहते हैं। मालवा में साधारण तौर पर भोजन दो बार किया जाता है। एक बार दोपहर को और दूसरी बार शाम को जिसे अंथऊ कहते हैं।

ग्वालियर और मालवा दोनों प्रदेशों में धनी लोग सवेरे कुछ जलपान करते हैं, जाड़ों में चाय और गर्मियों में दूध पीते हैं। दूध के साथ जलेबी खाई जाती है। दोपहर के बाद फल और मिठाइयाँ खाई जाती हैं। मध्यम और उच्च श्रेणी के लोग पूड़ी, कचौड़ी, हलुआ, दूध, घी, खीर, फुलकी, रोटियां, मांस, तरकारी, दाल, चावल, बरा, फुलौड़ी, कढ़ी आदि खाते हैं। इसके सिवा भांति भांति की मिठाइयां तथा नमकीन खाये जाते हैं। वहां के स्थानीय ब्राह्मण तथा वैश्य लोग मछली नहीं खाते हैं।

ग़रीब किसान तथा मज़दूर ज्वार बाजरे की रोटी कोदों का भात (चावल), महुआ, महेरी और मक्का

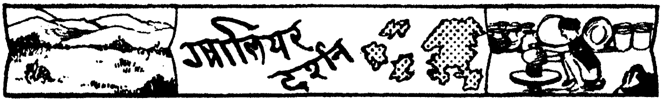
खाते हैं। कोल, भिल द्राविड़ और सहारीय जातियाँ ज्वार, मक्का और महुआ खाते हैं।

राज्य के किसान मिट्टी के घर बनाते हैं। घरों की छतें घास की और मिट्टी तथा लकड़ी के तख्तों की बनाई जाती हैं। ग्वालियर और दूसरे स्थानों में जहां कहीं बलुआ पत्थर मिलता है वहाँ घर पत्थर के बनाये जाते हैं। नगरों में कई तल्लों के कोठे बनाये जाते हैं।

मालवा में घर ईंट तथा पत्थर के बनाये जाते हैं। छत घास या खपड़ों की बनाई जाती है। बड़े घरों की खुली छतें सिमेंट की बनाई जाती हैं। मंदसोर और उज्जैन में ऊपरी कोठे लकड़ी के सुन्दर नक्काशदार बनाये जाते हैं जिनके छज्जे तथा खिड़कियां आगे की ओर निकली रहती हैं।

सहारोय तथा भिल लोगों के झोंपड़े घास और पत्तियों के बनाये जाते हैं।

हिन्दू लोग अपने मृतक शरीर को जलाते हैं। सन्यासी और बच्चों की लाशें गाड़ी जाती हैं। लाशों को नदी के किनारे जलाते हैं और सम्भवतः किसी पवित्र



नदी में फल को प्रवाह करते हैं नहीं तो समीपवर्ती दूसरी नदियों में डाल देते हैं। कुछ लोग मृतक शरीर को भस्म करने के बाद हड्डियों को मिट्टी के बर्तन में भर कर पीपल के वृत्त के नोचे गाड़ देते हैं और फिर उसे गंगा जी में लाकर प्रवाह करते हैं। मुसलमान अपनी लाश को धरतो में गाड़ देते हैं।



देश दर्शन

खेल तमाशे और त्योहार

ग्वालियर राज्य के बच्चे और दूसरे देशों की भांति तरह तरह के खेल खेला करते हैं। गुल्ली-डंडा, आंठ गोली, सलह गोली खेल अधिक बच्चे खेलते हैं। आँख मिची या आँखमुंदौला का खेल बच्चे संध्या समय खेलना अधिक पसंद करते हैं। गांव के बच्चे एक स्थान पर इकट्ठे होते हैं और चार बालक अपनी आंखें अपने हाथों से ढँक लेता है। सभी बालक भाग कर छिप जाते हैं। चोर सभी बालकों का तलाश करता है। छिपने वाले बालक पुनः उसी स्थान पर आने का प्रयत्न करते हैं जहां पर चोर बालक आंख मूँदे खड़ा था। यदि चोर बालक किसी को छू लेता तो जो बालक छू जाता है वह चोर बनता है और फिर खेल पहले की भांति ही चलता रहता है।

स्कूल कालेजों में फुटबाल, हाकी, क्रीकेट वाली बाल आदि खेल खेले जाते हैं। घरों के अन्दर शतरञ्ज, चौपड़ ताश, गंजीफा, चंग, दशौतारी आदि खेल लोग खेलते हैं। राज्य की राजधानी के उच्च श्रेणी वाले लोग कबूतर तथा मुर्गे की लड़ाई के तमाशे में अपना समय व्यतीत

करते हैं । बड़े नगरों में नाटक के खेल होते हैं। भाट लोग वंशावली तथा महाभारत और रामायण के गीत गाते हैं जिसमें बहुत लोग जमा हो जाते हैं। धनी लोग नाच, गान और सितार आदि में अपनी तबीअत बहलाते हैं। व्याह में भी यही तमाशे होते हैं।

ग्वालियर राज्य में जितने त्योहार होते हैं उनमें दशहरा, दिवाली, होली, मोहर्रम और महाराज के वर्ष गांठ के दिन बड़े समारोह के साथ मनाये जाते हैं।

दशहरा का उत्सव क्वार शुक्ल पक्ष में होता है। सबसे अधिक आवश्यक दिन दशहरा का होता है। दशहरा का समय वर्षा ऋतु के अंत में होता है। दशहरा के अवसर पर ही मरहठे और राजपूत लोग विजय यात्रा किया करते थे। मर्यादा पुरुषोत्तम महाराज रामचन्द्र जी भी इसी अवसर पर रावण से युद्ध करने के लिये गये थे।

दशहरे के उत्सव के ९ दिन (नव-रात्रि) धार्मिक कार्यों में व्यतीत किये जाते हैं। बहुत से लोग महाकाली (शक्ति) की उपासना करते हैं। कुछ रामायण का पाठ करते हैं और ९ दिन तक व्रत करते हैं। दसवां दिन (पूजा समाप्त होने के बाद) आनन्द का होता है।

देश दर्शन

दशहरा के समय ग्वालियर नरेश का दर्बार लगता है। जिसमें राज्य के सर्दार तथा अफसर इकट्ठा होते हैं। महाराज जलूस में प्राचीन महाराजवाड़ा से विक्टोरिया कालेज के सामने के मैदान तक जाते हैं। सड़क के दोनों ओर राज्य के सैनिक खड़े रहते हैं और जलूस में भाग लेते हैं। इस उत्सव में एक भैंसे का बलिदान होता है। सभी अस्त्र-शस्त्रों की पूजा होती है। राज्य का यह जलूस देखने योग्य होता है। जलूस में प्रायः राज्य के साथ अधिकारी और प्रजागण भाग लेते हैं।

दिवाली का उत्सव चतुर्दशी से आरम्भ होता है। दिवाली रोज़गारी लोगों का मुख्य त्योहार है। दिवाली के समय पर ही महाजन, रोज़गारी, सौदागर लोग अपना साल भर का हिसाब बन्द करके पुनः नई बहियों पर हिसाब चढ़ाते हैं। दिवाली में लक्ष्मी (धन की देवी) की पूजा होती है। सभी लोग तीन दिन तक जुआ खेलते हैं। सड़कों, घरों और खेतों में दीवे जलाये जाते हैं जो बड़े अधिक शोभायमान होते हैं। उत्सव के अंत में आतशबाज़ी होती है।

होली का त्योहार फाल्गुण की पूर्णिमा को होता है।

समस्त भारत की भांति यह त्योहार ग्वालियर राज्य में भी मनाया जाता है। सभी स्थानों पर गाना बजाना होता है। इस उत्सव में लोग भांति भांति के पकवान बनाकर खाते तथा दूसरों को खिलाते हैं। स्त्रियां होली के भोज में अधिक भाग लेती हैं। इस उत्सव की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि अबीर और गुलाल सभी लोगों तथा वस्तुओं पर डाले जाते हैं। समूह बनाकर लोग एक दूसरे के घरों पर होली मिलने तथा रंग खेलने जाते हैं।

गांवों में इस उत्सव पर तरह तरह के खेल खेले जाते हैं। प्रत्येक गांव में लकड़ी का एक लट्ठा गाड़ा जाता है और उसके सिरे पर कपड़े में कोई दनदानेदार वस्तु लपेट कर बांध दी जाती है। गांव की स्त्रियां बांस लेकर लट्ठे की रखवाली करती हैं। नवयुवक बँधी हुई वस्तु को छूने की कोशिश करते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को सात बार कोशिश करने का अवसर दिया जाता है। जो व्यक्ति छू लेता है वह विजयी माना जाता है और उसे गांव के मुखिया की ओर से एक पगड़ी इनाम दी जाती है।

राज्य में एक दूसरा रिवाज़ यह है कि एक बड़े

लोहे की नांद में पानी भरा जाता है। नांद की रक्षा स्त्रियां करती हैं। इन स्त्रियों के हाथ में बांस के लट्ठे या लाठियां रहती हैं। गांव के नवयुवक नांद को गिराने की कोशिश करते हैं। जो नांद गिराने में सफल होता है उसे गांव की ओर से इनाम मिलता है।

गणेश चतुर्दशी और गनगौर के त्योहार मालवा के लोगों के बीच प्रधान त्योहार माने जाते हैं।

मुहर्रम मुसलमानों का मुख्य त्योहार है। इस उत्सव में बड़े बड़े भोज होते हैं। ताज़िये निकाले जाते हैं। सभी प्रसिद्ध तथा उच्च श्रेणी के लोग (हिन्दू और मुसलमान) अपने ताजिये जलूस में भेजते हैं। महाराज का ताजिया भी निकलता है।

महाराज के जन्म दिवस के दिन समस्त राज्य में और खास कर राजधानी में बड़ा उत्सव मनाया जाता है। एक बड़ा दर्बार लगता है जिसमें राज्य के सभी कर्मचारी तथा सदस्य भाग लेते हैं। राज्य की ओर से एक बड़ा भोज होता है।

कारबार

व्यापार

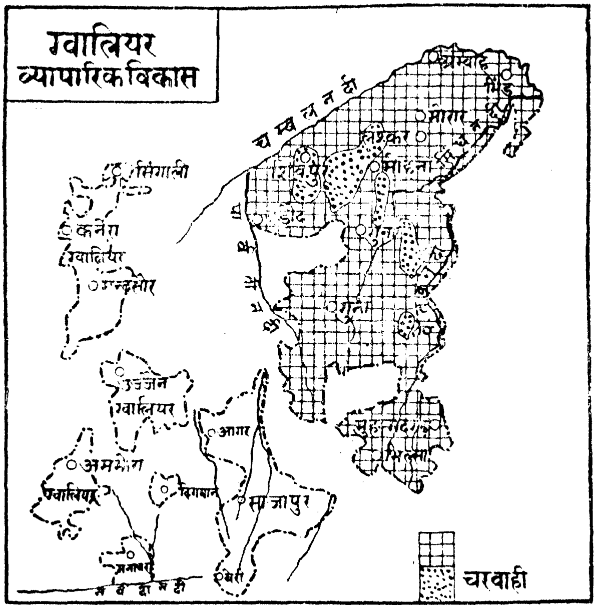
प्राचीन समय में ग्वालियर का व्यापार बहुत बढ़ा चढ़ा न था फिर भी उज्जैन नगर के कपड़े समस्त भारत में प्रसिद्ध थे। उज्जैन नगर का कपड़ा बाहर भेजा जाता था परन्तु अब ग्वालियर राज्य का व्यापार उन्नति कर रहा है।

ग्वालियर राज्य में जो सामान बाहर से आता है उसमें नमक, चावल, चीनी, धातु के बर्तन, कागज़, मशीन के सामान तथा पुर्जे, अस्त्र-शस्त्र, कपड़े तथा मिट्टी का तेल आदि मुख्य हैं। यह सामान कानपुर, बम्बई, आगरा, अहमदाबाद, इन्दौर और भिलवाड़ा से आते हैं।

ग्वालियर राज्य से नाज, तेलहन, अफीम, पोस्ता, रूई, घी और सूती कपड़ा मुख्यतः बाहर भेजे जाते हैं। ग्वालियर से अफीम और चीनी बाहर भेजी जाती है परन्तु अब अफीम का रोज़गार कम हो गया है और दूसरे सामान भारत के प्रसिद्ध नगरों को भेजे जाते हैं।

राज्य में सबसे प्रसिद्ध व्यापारिक केन्द्र लश्कर, उज्जैन, भिंड, मोरेना, सलगढ़, शिवपुर, नीमच, मुंगौली

पछार, चंदेरी, मन्दसौर, शाजापुर और गंगापुर नगर हैं। उज्जैन और मन्दसौर अफीम के व्यापार के केन्द्र हैं।



प्रत्येक छोटे बड़े गांव में साप्ताहिक बाज़ार लगता है जिसमें लोग अपने सामान लेकर बेचने आते हैं। व्यापारिक केन्द्र के एजेन्ट भी बाजार में आते हैं। गांव के निवासी बाज़ार में अपने आवश्यक सामान खरीदते हैं

और अपने जानवर तथा नाज बेचते हैं। गांव के बाज़ार सप्ताह के भिन्न भिन्न दिनों पर लगते हैं जिसमें व्यापारी लोग अधिक से अधिक बाज़ारों में जा सकें।

ग्वालियर के मारवाड़ी बनिया सबसे बड़े व्यापारी हैं। वह नाज, अफीम और फुटकर सामान का व्यापार करते हैं। मुसलमान बोहेरस धातु तथा लोहे पीतल आदि के बने सामान, कल पुर्जे, अस्त्र-शस्त्र, मिट्टी का तेल और योरुपीय सामान का व्यापार करते हैं। पारसी लोग योरुप के बने सामान तथा शराब का व्यापार करते हैं।

राज्य के अधिकांश गांवों में मारवाड़ी अथवा दूसरे बनियों की दूकानें हैं। यह लोग स्थानीय लोगों को रुपया तथा नाज आदि ऋण के तौर पर देते हैं।

राज्य में अँग्रेज़ी मुद्रा ही सब से प्रसिद्ध हैं। हुंडी भी चलती हैं परन्तु नोट वहां पर बहुत कम चलते हैं।

राज्य में गणेश दास कृष्ण जी, राय बहादुर मूलचन्द्र गोपीचन्द्र सोनी, नाथमल जीतमल, सीताराम महलाद दास, अमृतसर बैङ्क लिमिटेड, भजन लाल और

बृद्धिचन्द्र आदि मुख्य दूकानें हैं। लश्कर में बंगाल तथा पंजाब बैंकों की शाखायें हैं।

सड़कों और रेलवे के निकल जाने से विदेशी व्यापार में अधिक उन्नति हो गई है। अभी और अधिक उन्नति होने की पूर्ण सम्भावना है।

पहले बाहरी व्यापार को बंजारे लोग चलाते थे। परन्तु सड़कों और रेलवे लाइनों के निकल जाने से बंजारों का रोज़गार समाप्त हो गया है। जानवरों के स्थान पर अब गाड़ियों द्वारा सामान भेजा जाता है।

ग्वालियर, उज्जैन और शिवपुरी में बड़े बड़े बिजली घर हैं। इन नगरों के कारखानों में बिजली से काम लिया जाता है। रुई साफ करने का यहाँ एक बड़ा कारखाना है और चन्देरी में सुन्दर मलमल बनता है जो बाहर जाता है।



आने जाने के मार्ग

प्राचीन बौद्ध पुस्तकों में दक्खन में पाटन और सरस्वती से उज्जैन तथा भिल्सा आने वाले मार्गों का वर्णन है शेरशाह ने १५४०-५४ ई० के बीच आगरा-भरतपुर सड़क बनवाई थी। उसने सड़कों के किनारे किनारे वृक्ष लगवाये थे। स्थान स्थान पर सरायें बनवाई थीं जिनमें ब्राह्मण लोग हिन्दू तथा मुसलमानों की सेवा के लिये रक्खे गये थे। प्रत्येक सराय में दो दो सवार रक्खे गये थे जो डाक पहुंचाने का काम करते थे।

मुग़ल सम्राटों के समय में भी ग्वालियर राज्य में कुछ मार्ग बनाये गये थे।

ग्वालियर राज्य में चार खास रेलवे लाइनें हैं। १—ग्रेट इण्डियन पेनिनसुला रेलवे जिसकी शाखाएं बारन और उज्जैन को जाती हैं। २—बाम्बे-बड़ौदा और सेंट्रल इंडिया रेलवे जो रतलाम और उज्जैन को जाती है। ३—राजपूताना-मालवा रेलवे और ४—ग्वालियर लाइट रेलवे लाइन।

ग्रेट इण्डियन पेनिनसुला रेलवे

यह लाइन चम्बल नदी को पार करने के बाद ग्वालियर राज्य में प्रवेश करती है। भिल्सा स्थान पर यह ग्वालियर राज्य को छोड़ती है। राज्य के अन्दर इसकी लम्बाई १२० मील है। इस लाइन पर मोरेन, मोरार रोड, ग्वालियर, बड़ौदा और भिलसा मुख्य रेलवे स्टेशन हैं।

भोपाल उज्जैन ब्राँच

यह लाइन अपनी प्रधान लाइन से भोपाल स्थान पर अलग होती है कुछ दूर भोपाल राज्य में चलने के बाद यह ग्वालियर राज्य में ७० मील तक जाती है। ग्वालियर राज्य के इस लाइन के मुख्य स्टेशन शुजालपुर मक्सी और उज्जैन हैं। मक्सी आगरा-बम्बई सड़क पर भी है। यह लाइन ग्वालियर और भोपाल (दोनों) नरेशों के रुपये से बनी थी।

बीना-गूना-बारन शाखा

यह शाखा बीना स्थान पर राज्य में प्रवेश करती है। ग्वालियर राज्य में यह लाइन ६९ मील लम्बी है।

यह लाइन ग्वालियर तथा कोटा राज्य के रुपये से बनाई गई थी। इस लाइन के मुख्य स्टेशन मुंगौली, पछार और गूना हैं।

गोध्रा-रतलाम-नाग्दा शाखा

यह बम्बई-बड़ौदा और सेंट्रल इण्डिया रेलवे की शाखा है। यह शाखा प्रधान लाइन से बड़ौदा स्थान पर अलग होती है। यह राज्य में ४६ मील तक है और इस पर कचरौद, नाग्दा और उज्जैन मुख्य नगर हैं।

राजपूताना मालवा रेलवे

इस लाइन की अजमेर-खँडवा शाखा राज्य में १५८ मील लम्बी है। इस पर मुख्य स्टेशन नीमच, मंदसौर और बड़नगर हैं। फतेहाबाद से एक शाखा उज्जैन को जाती है।

ग्वालियर लाइट रेलवे

यह समस्त लाइन ग्वालियर राज्य में है और ग्वालियर दर्बार के रुपये से बनाई गई थी। इसका प्रबंध ग्रेट इण्डियन पेनिनसुला रेलवे के हाथ में है। इसके बनाने में ४४ लाख रुपये लगे थे। इसके तीन भाग हैं।

एक शाखा ग्वालियर से भिंड को ५३ मील, दूसरी ग्वालियर से सीपरी को ७४ मील और तीसरी ग्वालियर से सबलगढ़ को ५७ मील है कई छोटी छोटी लाइनें महाराज के महल तथा शिकार वाले स्थानों को जाती हैं। लाइट लाइन शिवपुर और सबलगढ़ को भी बढ़ा दी गई है। नाग्दा से कोटा और मथुरा को भी रेलवे जाती है।

ग्वालियर राज्य में आगरा-बम्बई सड़क सबसे बड़ी (२१६) मील है। इसके सिवा ग्वालियर-झाँसी, ग्वालियर-इटावा, झाँसी-सीपरी, उज्जैन-अगर और महोवा-नीमच-नसीराबाद सड़कें हैं।

ग्वालियर राज्य में २३३१ मील पक्की सड़क है इनका प्रबन्ध कम्पनियों के हाथ में है। ग्वालियर राज्य इस समय ब्रिटिश साम्राज्य के हवाई नक़शे में एक मुख्य स्थान है। यह राज्य दिल्ली और कलकत्ता के हवाई मार्ग पर है और इम्पाएर एअर मेल योजना के ट्रांस इण्डियन मार्ग पर भी पड़ता है। माधो सागर नामक स्थान जहां हवाई जहाज ठहरते हैं वायुयानों का स्टेशन बनाया जा रहा है। इसको सुन्दर बनाने की

बड़ी कोशिश की जा रही है। आशा की जाती है कि यह भारतवर्ष में अपने प्रकार का एक ही होगा।

ग्वालियर राज्य में ग्वालियर तथा उत्तरी भारत ट्रान्स्पोर्ट कम्पनी है। यह मोटर वालों को एक बड़ी भारी कम्पनी है। ग्वालियर में डाक व तार का अलग अलग प्रबंध है।

१८८५ ई० तक ग्वालियर राज्य में डाक का कोई खास प्रबन्ध नहीं था। १८८५ और १८८८ ई० के समझौते के अनुसार ब्रिटिश साम्राज्य और ग्वालियर राज्य के मध्य पत्र, पारसल, मनोआर्डर, रजिस्ट्री और इंशोर्ड पत्र आने जाने लगे। सम्राट् के डाकों में ग्वालियर राज्य लिखा रहता है। लिफाफों और पोस्टकार्डों पर पर भी "ग्वालियर राज्य" चिन्ह आदि छपे रहते हैं।

देश-दर्शन

राजनैतिक विभाग

शासन के ध्यान से ग्वालियर राज्य दो खास भागों में बँटा है। १—उत्तरी ग्वालियर २—मालवा। उत्तरी ग्वालियर का शासन ग्वालियर से होता है और मालवा का शासन सर-सूबा द्वारा होता है जिसकी राजधानी उज्जैन है।

ग्वालियर राज्य में कुल ११ ज़िले और ४२ परगने हैं।

उत्तरी ग्वालियर में ग्वालियर गिर्द, तोंवरघर, भिंड, शिवपुर, नरवर, भिल्सा और ईसागढ़ के ७ ज़िले हैं। ग्वालियर गिर्द ज़िला में ग्वालियर गिर्द, मस्तूर और पिछोर परगने हैं।

तोंवर घर जिले में अम्बाह, गोहद, जोरा और नूराबाद के परगने हैं।

भिंड जिले में भंडेर, भिंड, लहार और महँगांव के परगने हैं।

शिवपुर जिले में विजयपुर, सबलगढ़ और शिवपुर के परगने हैं।

नरवर जिले में करेर, कोलारस, पिछोर और सीपरी के परगने हैं।

भिल्सा जिले में बासोद और भिल्सा दो परगने हैं।

ईसागढ़ जिले में बजरङ्गगढ़, ईसागढ़, कुम्भराज और मुँगौली के परगने हैं।

मालवा प्रान्त में उज्जैन, शाजापुर, मंदसौर और अमझेरा के ४ जिले हैं।

उज्जैन जिले में बड़नगर, खाचरौद और उज्जैन के परगने हैं।

शाजापुर जिले में अगर, नलखेरा, शाजापुर सोन कच्छ और सुसनेर के परगने हैं। मन्दसोर, वारंगढ़, नीमच और सिंगोली के परगने हैं।

शाजापुर जिले में अगर, नलखेरा शाजापुर सोनकच्छ और सुसनेर के परगने हैं।

मन्दसोर जिले में भाऊगढ़ और गङ्गापुर, जावद मन्दसोर वारंगढ़, नीमच और सिंगोली के परगने हैं।

अमझेरा में दो परगने है। एक का नाम अमझेरा और दूसरे का बाक्कानेर है। दक्केन का भाग जिसमें गाँव नहीं है परन्तु राज्य दर्बार को वहाँ से सालाना कुछ आमदनी हो जाती है।

डाक और तार

अमझेरा में दो परगने हैं। एक का नाम अमझेरा और दूसरे का बाकानेर है। दकेन का भाग जिसमें गांव नहीं है। परन्तु राज दरबार को वहां से सालाना कुछ आमदनी हो जाती है।

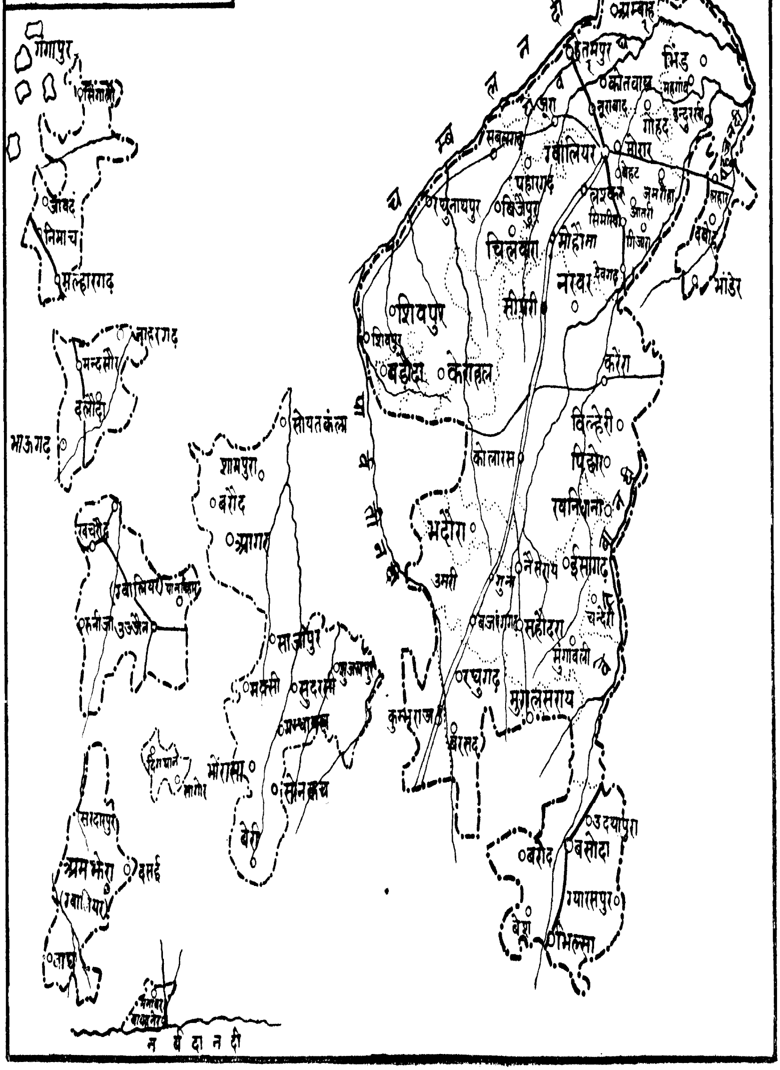
ग्वालियर जिले में ब्रिटिश सरकार की ओर से ग्वालियर रेलवे स्टेशन ग्वालियर रेजीडेन्सी, जनकताल और मोरार रेलवे स्टेशन पर डाक घर है। अंतरी, भितरवार, पिछोर, अरोन ग्वालियर, लश्कर, मोरार और घाटी गांव में ग्वालियर दर्बार की ओर से डाक घर हैं।

रेलवे के दफ्तरों के सिवा जनकताल और ग्वालियर रेज़ीडेन्सी में तार घर बने हैं।

तोंवर घर ज़िले में मोरेना में ब्रिटिश सरकार की ओर से और अम्बाह, ऐनों, बागचिनी, गोहद, गोर्सी, हतमपुर, जोरा, जिग्नी, मोरेना, नूराबाद, पोर्सा और सुमौली में राज्य दरबार की ओर से डाक घर बने हैं।

भिंड ज़िले में अतेर, भांडेर, भिंड, दबोह, झाँसी,

ग्वालियर-राजनैतिक



भिंड
गोहद
ग्वालियर
मोरार
सबलगढ़
पहारगढ़
बिजैपुर
रघुनाथपुर
चिलवारा
नरवर
सीपरी
लश्कर
शिवपुर
बड़ोदा
करावल
करेरा
कोलारस
पिछोर
भदौरा
गुना
बजरंगगढ़
ईसागढ़
चन्देरी
मुंगावली
रघुगढ़
मुगलसराय
कुम्भराज
उदयपुरा
बसोदा
बरोद
ग्यारसपुर
भिलसा
भांडेर
गंगापुर
आंवद
निमाच
मल्हारगढ़
मन्दसौर
भाऊगढ़
उज्जैन
शाजापुर
सुदारसा
सोनकच
बेरी
शामपुर
आगर
अमझेरा
ग्वालियर
न र्बदा न दी
च म्ब ल न दी

मेल एजेन्सी, महगांव, महोन, मऊ और ऊमरी में डाकखाने हैं। इस ज़िले में केवल रेलवे स्टेशनों पर तार घर हैं।

शिवपुर ज़िले में कोई भी डाकखाना ब्रिटिश सरकार की ओर से नहीं है, सबलगढ़, शिवपुर कैलारस, बिजयपुर, कोधर, कराहल, पंडोल और मानपुर स्थानों में ग्वालियर राज्य की ओर से डाक खाने बने हुये हैं।

नरवर ज़िले में सीपरी, चंदेरी, दिनार, झोरी, करेन, कोलारस, मगरोनी, नगवर, पिछोर, रनोद, में ग्वालियर राज्य की ओर से डाक घर हैं। सीपरी में ब्रिटिश सरकार की ओर से भी डाक घर बना है। रेलवे स्टेशनों के सिवा सीपरी में भी तार घर बनाया गया है।

भिल्सा जिले में भिल्सा, बासोद और कुलहार में ब्रिटिश सरकार की ओर से तार घर हैं। भिल्सा अहमदपुर, बासादे, ग्यारसपुर, खरी, नतेरन, शम्साबाद और तेओद में ग्वालियर राज्य की ओर से डाकखाने हैं। रेलवे स्टेशनों के सिवा भिल्सा में एक तार घर बनवाया गया है।

ईसागढ़ ज़िले में गूना में ब्रिटिश सरकार की ओर से

एक डाक घर खोला गया है। आरोन बजरंग गढ़, बमोरी, चानचंरा, ईसागढ़, गूना, कुम्भराज, मुगौली, नया सराय, पिछोर, पिपरई, राथग्रई और शादोरा में ग्वालियर दरबार की तरफ से डाक घर बने हैं। रेल। स्टेशनों के अलावा इस जिले में गूना कैंटोनमेंट में तार घर बना है।

मालवा प्रान्त में अगर, बाघ, मंदसोर, नीमच, शाजापुर, सोनकच, बड़नगर, नगदा, सोयतकलाँ और उज्जैन में तार घर तथा डकखाने बने हैं। मालवा प्रान्त में ग्वालिवर राज्य की ओर से ५८ डाकखाने बने हैं।

उज्जैन जिले में उज्जैन, बड़नगर और नागदा स्टेशनों पर ब्रिटिश सरकार की ओर से डाक घर हैं। बड़नगर, भैंरोंगढ़, खांसोलकलां, खचरौद, नाग्दा ताजपुर और अंडेल में ग्वालियर राज्य की ओर से डकाखाने हैं।

शाजापुर ज़िले में अगर, शाजापुरसुँदर्सी, सोएत और सोनकच में ब्रिटिश सरकार की ओर से डाकघर अगर, अकोदीबेर्छा, भैंसोद, भौंरास, बौजै, दुपाद, कानद, मक्सी, नलखेड़, न्योरी, फरीजा, शाजापुर, शुजालपुर, सोनकच, टोंक, रनथम्भोर, पिपलोन, अबतीपुर बगोदिया

और बड़गांव में ग्वालियर सरकार की ओर से डाक घर हैं।

अगर शाजापुर, सोनकच में और रेलवे स्टेशनों में तार घर हैं।

मंदसोर ज़िले में मंदसोर और नीमच में ब्रिटिश सरकार की ओर से डाक घर बने हैं। मंदसोर अफ़ज़लपुर, बगान, भूगढ़, बिछोर, देकन, धाधर, गंगापुर, जावद, जाट, जीरन, नहरगढ़, निकुम्भ नीमच, रतनगढ़ सावां, सिंगोली और नाग्री में ग्वालियर राज्य की ओर से तार घर बने हैं।

रेलवे स्टेशनों के सिवा इस ज़िले में मंदसोर और नीमच में भी तार घर हैं।

अमझेरा ज़िले में अमझेरा, बाकानेर, मनावर और टांडा में ग्वालियर राज्य की ओर से तार घर हैं।

ग्वालियर नगर

ग्वालियर नगर का उत्तरी भाग अपने नाम के पहाडी के नीचे बसा है जहां पर प्राचीन ग्वालियर नगर था। लश्कर राजधानी दो मील दक्षिण की ओर है। ग्वालियर स्टेशन ग्वालियर से १ मील और लश्कर से दो मील है।

ग्वालियर के किलेस म्बन्ध में एक बड़ी मनोरञ्जक कहानी है। एक बार सूर्यसेन कुतवार (ग्वालियर से २० मील उत्तर की ओर है) का लँगड़ा राजा शिकार खेलने गया। वह अपने साथियों से अलग हो गया। घूमते घूमते वह राजा पहाड़ी की चोटी पर पहुँचा। चोटी पर उसे ग्वालियर नामक योगी मिला। राजा प्यासा था। राजा को योगी ने अपने झोपड़ी के समीप वाले सरोवर से पानी पीने को दिया। पानी पीते ही राजा का पैर ठीक हो गया। राजा ने योगी से कहा आप ने मेरे ऊपर जो दया की है उसके बदले में मैं आप की क्या सेवा कर सकता हूँ। योगी ने सूर्यसेन को पहाड़ी पर किला बनवाने और सरोवर की सुन्दरता



बढ़ाने के लिये कहा। सूर्यसेन ने किला बनवाया और योगी के नाम पर ग्वालियर रक्खा। यह किला ईसा से ३१०१ वर्ष पूर्व का बना हुआ बतलाया जाता है।

ग्वालियर नगर में जामा मस्जिद, खँडोलखाँ की मस्जिद, मुहम्मद गौरी का मकबरा तानसेन की समाधि आदि देखने योग्य है। तानसेन भारतवर्ष का सबसे बड़ा गाने वाला माना जाता है।

ग्वालियर किले के उत्तर की ओर पठान द्वार है। किले के दो मील दक्षिण की ओर लश्कर है। इसको दौलत राव सिंधिया ने अपने लश्कर के लिये उपयुक्त स्थान चुना था इसी से इसका नाम लश्कर है। धीरे धीरे वहां नगर बस गया और वहीं राजधानी हो गई।

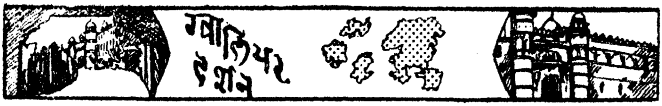
ग्वालियर का किला भारत में बहुत प्रसिद्ध है। यह पहाड़ी पर स्थित है। इसकी लम्बाई २ मील और चौड़ाई २,८०० फुट है। उत्तर पूर्व की ओर से देखने में किला बड़ा ही सुन्दर प्रतीत होता है। किले के पूर्व की ओर महाराज मानसिंह के महल हैं।

किले के प्रवेश करने का मुख्य द्वार पूर्व की ओर है। ६ द्वारों में होकर लोग पहाड़ी की चोटी पर पहुंचते

हैं। सबसे नीचा द्वार आलग गोही दरवाजा है उसके ऊपर बदलगढ़ पाल द्वार है। बदलगढ़ पाल के ऊपर भैरों द्वार उसके बाद गणेश द्वार है। भैरों द्वार के पास कबूतर खाना है जहाँ पर नूर सागर नामक सरोवर है। लत्तमण द्वार पर एक छोटा मन्दिर है जिसे पहाड़ी के एक भाग को काट कर बनाया गया था। यह मन्दिर चतुर्भुज भगवान का है। इस मन्दिर में महाराज भोज के दो शिला लेख हैं। यह शिल्प लेख ६३२ ई० के हैं। यहाँ का विष्णु मन्दिर अल्ल नामक व्यक्ति का बनवाया हुआ है। वह किसी समय में श्री मोप गिरी किले का संरक्षक था। विष्णु मन्दिर वेल्लभट स्वामी का मन्दिर कहलाता है।

लक्ष्मण द्वार के सामने विष्णु के बराह अवतार की मूर्ति है। वराह के सिर पर दो हाथियों से बना हुआ मंडप है। द्वार मार्ग में दो जलकुण्ड हैं जहां हर समय पानी रहता है। यह कुँड अनार तथा सरद कुण्ड के नाम से प्रसिद्ध हैं। उससे आगे हाथी पोल द्वार है। यह द्वार मानसिंह के पहले के समय का बना हुआ है।

इस द्वार को पार करने पर हम किले में प्रवेश कर



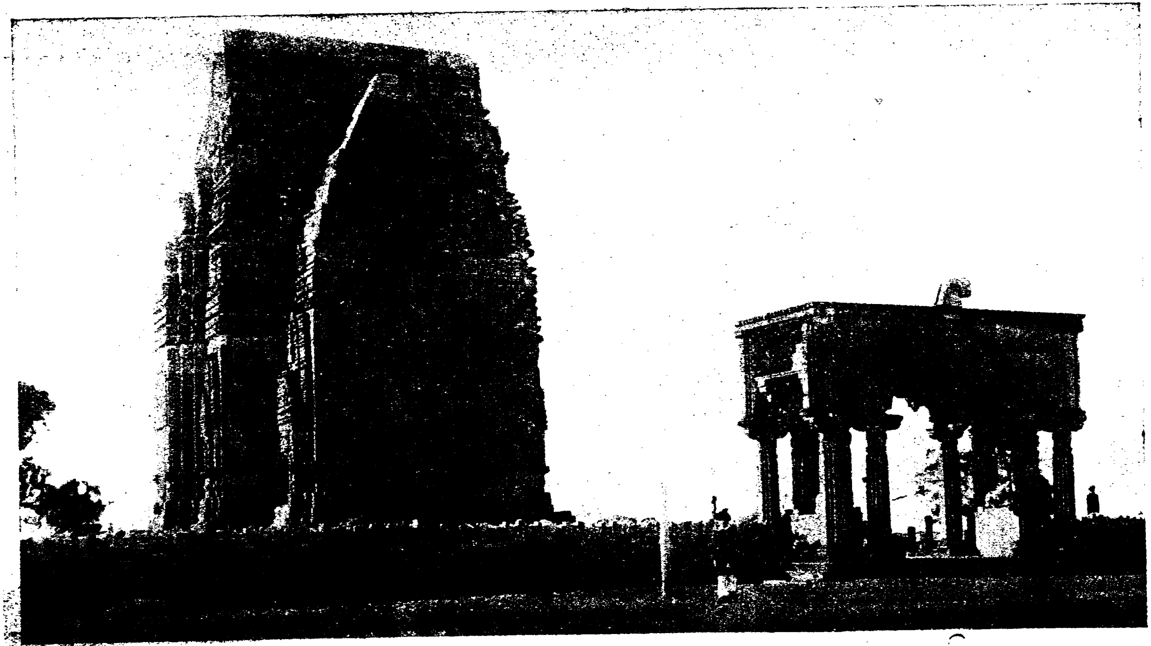
जाते हैं। किले के उत्तर पश्चिम में धोंद पोल नामक द्वार है। यह द्वार नव-चौकी के समीप है। नव-चौकी में राजनैतिक कैदी रक्खे जाते थे। दक्षिण पश्चिम में चरग-राज पोल द्वार है। इस द्वार पर ऊपर से पानी गरज (आवाज़) के साथ गिरता है इसी कारण द्वार का नाम चरगराज है। उरवाही द्वार से उरवामी घाटी को मार्ग जाता है। यह घाटी किले के बाहर स्थित है। इस घाटी में बहुत कुएँ हैं। कुओं की रक्षा के लिये घाटी के चारों ओर दिवार बना दी गई है। किले के ऊपरी भाग में कई एक पानी के कुण्ड हैं। सूर्य कुण्ड के समीप किसी समय में सूर्य मन्दिर था। दूसरा प्रसिद्ध ताल जौहर ताल है। १२३२ ई० में शाह अल्तमश के समय में इसी स्थान पर राजपूत स्त्रियों और बच्चों ने जौहर की रस्म बनाई थी।

किले के भीतर ६ महल हैं जिनमें चार हिन्दू और दो मुसलमानी हैं।

लक्ष्मण और हाथी पोल द्वार के मध्य मानसिंह का सुन्दर महल है। इस किले की ३०० फुट लम्बी और १०० फुट ऊँची दीवार पहाड़ी काट कर बनाई गई

है। किले के दक्षिण-पूर्व की ओर गजरी महल है। इस महल की खिड़कियां और झरोखे बड़े सुन्दर हैं। यह महल महाराज मानसिंह ने अपनी सुन्दर मृगनयन रानी के लिये बनवाया था।

किले पर अब भी बहुत सी समाधियां हैं जिनमें सासु बहू (सहस्र-बाहु) की दो समाधियां हैं। तीसरी समाधि कछाव नामक राजकुमार की है जिसे कच्छप घाट कहते हैं। शिला लेख में इस मन्दिर का नाम हरिसदानन है जिसे और दूसरे स्थानों पर अनिरुद्ध नाम से पुकारा गया है। किले में तेली मन्दिर की इमारत सबसे अधिक ऊँची है। यह मन्दिर ११० फुट ऊँचा है और ६० फुट वर्गाकार स्थान पर बना है और पूर्व की ओर ११ फुट निकला हुआ बरामदा है। यह तिलंगाना मन्दिर से बिगड़ कर मन्दिर हो गया है। पहले यह विष्णु मन्दिर तथा क्योंकि द्वार पर उड़ते गरुण की मूर्ति बनी है। बाद को जब यह शिव मन्दिर बनाया गया तो द्वार के भीतर एक दूसरा द्वार बनाया गया जिसमें गणेश जी की मूर्ति बनाई गई। यह मन्दिर दसवीं सदी का बना हुआ है।



पन्द्रहवीं शताब्दी का हिन्दू मन्दिर ।



ग्वालियर का एक प्राचीन बौद्ध कालीन भवन।

इनके सिवा सूर्य देव, ग्वालियर, चतुर्भुज जयन्तिथोंर, माता देवी, धोंद देव और महादेव के मन्दिर हैं।

ग्वालियर दिगम्बर जैनियों के विद्या का एक प्रमुख स्थान है। किले के अन्दर पारस नाथ का एक मन्दिर है।

ग्वालियर नगर का लश्कर मुहल्ला अभी हाल का बना है। यह स्थान लश्कर (सेना) के ठहराने तथा परेड कराने के लिये चुना गया था फिर यहां पर बाज़ार लग गया और लोग अपने घर बनाकर रहने लगे। अब यहां बहुत अच्छी बस्ती हो गई है। लश्कर ही ग्वालियर की राजधानी है।



देश दर्शन

उज्जैन

उज्जैन का प्राचीन नगर उज्जैन नगर से दो मील उत्तर की ओर स्थित था। भूचाल और सीपरी नदी में अचानक बाढ़ आ जाने से उज्जैन का प्राचीन नगर नष्ट हो गया था। प्राचीन नगर के खण्डहर में वर्षा होने पर माले की गुरियां मुहरें, आभूषण, हीरे जवाहिरात, मुद्रे आदि मिलते हैं। यदि इस स्थान की खोदाई की जावे तो बहुत सी प्राचीन वस्तुओं का पता चल सकता है। उज्जैन नगर में ही जैन धर्म के श्वेताम्बर और दिगम्बर दो मत हुये थे।

वर्तमान नगर आयताकार है। नगर का क्षेत्रफल लगभग दो मील है। पहले इस नगर के चारों ओर मालवा के सुलतानों ने दीवार बना रक्खी थी। प्राचीन दीवार के भीतर कई एक छोटी छोटी पहाड़ियां हैं। इन पहाड़ियों को मालवा के सुल्तानों ने बनवाया था। गोजेश्वर पहाड़ी से उज्जैन महल देखने का अच्छा दृश्य मिलता है।

उज्जैन नगर कई भागों में बटा है। प्रत्येक भाग वहां

के निवासियों अथवा उस भाग के नींव डालने वाले के नाम से पुकारा जाता है। जयसिंह पुर नामक मुहल्ले की स्थापना जयपुर के महाराज जयसिंह ने डाली थी जब कि वे मालवा के गवर्नर थे। इसके सिवा बोहोर-बाखल तथा कोर मुहल्ले हैं।

जयसिंह मुहल्ला नगर के पश्चिम की ओर है। इस मुहल्ले में जयसिंह महाराज की बनवाई हुई बेधशाला के खण्हर हैं। कोट (किला) मुहल्ला सबसे ऊँचा भाग है। बहुत से घरों के छज्जों पर बड़ा बढ़िया काम है। जहां पहले महाकाल बन था वहां महाकाल का मन्दिर है। इसके पास ही पुराना महल है जहां पहले श्रीमान् दौलत राव सींधिया महाराज रहते थे। यहाँ इस बुधवार को एक बड़ा बाजार लगता है।

वैशाखी और कार्तिकी पूर्णिमा को यहां बड़ा मेला लगता है। हर बाहरवें वर्ष यहां सिंहाष्ट उत्सव सबसे बड़ा होता है।

उज्जैन एक पुराना तीर्थ है। यह भारत के ७ पवित्र नगरों में गिना जाता है हिन्दू लोगों का कहना है कि

इन्द्र के पुत्र विक्रमादित्य की उत्पत्ति इसी नगर में हुई थी।

आर्य ज्योतिषियों और भूगोल-वेत्ताओं ने प्रथम देशान्तर (मध्यान्ह) रेखा यहीं स्थापित की थी। यहां के महाराज भोज का नाम सारे हिंदुस्तान में प्रसिद्ध है। यह एक प्राचीन तीर्थ स्थान है। यह नगर क्षिप्रा नदी के दाहिने किनारे पर स्थित है। पहले यह अवन्तिका पुरी के नाम से प्रसिद्ध था।

मौर्य काल में पश्चिमी राज्य की उज्जैन ही राजधानी थी और वहां पर मौर्य राजों के प्रतिनिधि शासन किया करते थे। उज्जैन नगरी के संबन्ध में बहुत सी प्राचीन कहानियाँ हैं जो अधिकतर विक्रमादित्य से संबन्ध रखती है।



दूसरे प्रसिद्ध नगर

भदौरा—की छोटी जागीर बहुत पुरानी है। हिम्मतसिंह सेसोदिया के सुपुत्र जगतसिंह सेसोदिया ने १७२० ई० में इसे लिया था। उमरी की जागीर भी इसी बंश के हाथ में है।

गढ़—एक पहाड़ी जागीर है।

खोनिया धान—एक छोटी रियासत है।

राघोगढ़राज्य—रेजीडेण्ट के आधीन है। पार्वती नदी से इस राज्य में सदा पानी मिलता रहता है। यहीं पृथ्वीराज चौहान के बंशज राज्य करते हैं।

गुना—एक ब्रिटिश छावनी है जो ईसा गढ़ जिले में स्थित है। आगरा से बम्बई जाने वाली पक्की सड़क यहां होकर गुजरती है। यहां रेलवे स्टेशन भी है।

खचरौद—उज्जैन जिले का परगना तथा नगर है। यह लकड़ी की रङ्गाई और तम्बाकू के लिये मशहूर है।

महाराजपुर—तोंवर घर जिले में एक ऐतिहासिक नगर है। १४३ ई० में यहां की फौज अँग्रेजी सेना के

साथ बड़ी बहादुरी से लड़ा उसी दिन यहाँ से १० मील की दूरी पर पनियार में एक छोटी लड़ाई हुई।

मन्दसोर—इसे पुराने समय में दशपुर कहते थे। यहाँ के एक शिला लेख में लिखा है कि कुमार गुप्त ने यहाँ एक मन्दिर बनवाया था। चौदहवीं सदी में अलाउद्दीन खिल्जी ने यहां एक किला बनवाया तब से मुसलमानी बस्ती बढ़ गई है। इसके पास ही हिमायूँ ने बहादुरशाह को हराया था। अठारहवीं सदी से यह नगर महाराज सिंधिया के अधिकार में है। महीदपुर की लड़ाई के बाद मन्दसौर में ही महाराज होल्कर और अँग्रजों के मध्य सुलह हुई थी।

तोंवरगढ़—ग्वालियर शहर के उत्तर में स्थित है। यहाँ अधिक तर तोंवर ठाकुर रहते हैं। इसी कारण इसका तोंवर गढ़ नाम पड़ा है। इसी ओर सिकरवाड़ी है जहां सिकरवार राजपूत रहते हैं। इनकी कहानी बड़ी विलक्षण है। मुसलमानी समय में इनके राजा अलवर में राज्य करते थे। मुसलमान बादशाह ने राजा की लड़की से ब्याह करना चाहा। इनकार करने पर राजा के कुटुम्बी लोग तलवार के घाट उतारे गये। कुछ लोगों को फतेह-

पुर सीकरी के शेखों ने शरण दी इसी से यह लोग सिकरवारी कहलाने लगे।

भिंड—यह अपने नाम के जिले का प्रधान नगर है। सिउनी नगर नरवर जिले का प्रधान नगर और छोटी लाइन का अंतिम स्टेशन है।

चन्देरी—तथा नरवर दूसरे नगर हैं। चन्देरी का पुराना किला नगर से २३० फुट ऊँचा है। भिल्सा इसी नाम के जिले का एक पुराना नगर है।

अमझेरा—एक अलग कोने में पड़े हुये पहाड़ी जिले का प्रधान नगर है। आगर नगर ग्वालियर राज्य में शाजापुर जिले में स्थित है यहां अँग्रेजी छावनी है रटरिया तलाव छावनी को कस्बे से अलग करता है।

बहादुरपुर—ईसागढ़ जिले में एक जागीर है। यहां मसर शाह फकीर की गद्दी है।

बजरंगगढ़—ईसागढ़ में एक परगना है। पहले इसका नाम झरकोन था यह खीची लोगों का किला था १८१६ ई० में सिंधिया राजा के अधिकार में आया। जब से यह मरहठों के अधिकार में गया है। तब से राघौं गढ़ के सरदार इस स्थान से होकर नहीं गये हैं।

बामारे—तोंवर गढ़ जिले में एक गांव है। यह सांख नदी के किनारे पर हैं। यहां पत्थर निकाला जाता है गांव से एक मील की दूरी पर कुँवर बाबा का मेला लगता है। यहां पर सांप के काटे हुये लोग अच्छे किये जाते हैं।

बरई—ग्वालियर गिर्द जिले में एक बड़ा गांव है। यहां जैन मन्दिर है और भादों मास में दो मेले लगते हैं। इस गांव का पान मशहूर है।

बड़ नगर—उज्जैन जिले में एक कस्बा है। यहां भारमलात बंश के राजपूत राज्य करते थे। अठारहवीं सदी में यह सिंधिया के अधिकार में आया। यहां पर रेलवे स्टेशन, थाना, डाक और तार घर है। पहले इसका नाम नोलई था।

बारो—भिल्सा जिले के गयनाथ पहाड़ी के नीचे छोटा गांव है। पहले यह एक बड़ा नगर था। गांव के चारों ओर एक पक्की दीवार है। यहां पुराने जैन तथा हिन्दू मन्दिरों के खण्डहर हैं। गांव के बीच में एक साधु की समाधि है। यहां पर एक बड़ा सरोवर है जिसके चारों ओर मन्दिर बने हैं।

बासोदा—भिल्सा जिले में एक परगना है। यहां पर रेलवे स्टेशन, थाना, डाक तथा तार घर हैं। पहले इसका नाम शाहजादपुर था। यहां शाह करमउल्ला की समाधि है। यहां के अधिकांश निवासी काछी हैं।

बेछी—शाजापुर जिले में एक जागीर है।

भादव यह गांव भादव की माता नामक देवी के मेले के लिये प्रसिद्ध है। रविवार और सोमवार का मेला लगता है। देवी को त्रिशूल तथा बकरियाँ चढ़ाई जाती हैं।

भैरौंगढ़—उज्जैन जिले में एक बड़ा गाँव है। यह सिप्रा नदी पर उज्जैन से एक मील उत्तर की ओर स्थित है। यह एक तीर्थ स्थान है। यहाँ का किला बड़ा सुन्दर है। किले के पश्चिमी द्वार पर भैरौं जी का मन्दिर है। असाढ़ की पूर्णिमा, बैशाख तथा कार्तिक चतुर्दशी को यहाँ मेला लगता है। नदी के किनारे तक मन्दिर बने हैं। यहाँ पर जेल, डाक तथा तारघर और थाना हैं।

भांडेरटाउन—भिंड जिले में हैं। यहां रुई, सूत और गल्ले का व्यापार होता है। इसका प्राचीन

नाम भंडकपुर है। यवनाश्व नामक राजा यहीं रहता था जिसका वर्णन महाभारत में है। प्राचीन नगर अब नहीं रह गया है वह भूकम्प से नष्ट हो गया।

भिल्सा—यह अपने नाम को जिला तथा परगना की राजधानी है। यह नगर बेतवा नदी के बाएँ तट पर है और ग्रेट इण्डियन पेनिनसुला रेलवे का स्टेशन है। यह प्राचीन हिन्दू नगर है परन्तु अब इसका ढंग मुसलमानी है। नगर के चारों ओर पक्की दीवार बनी है जिसमें तीन द्वार हैं। रायसेन द्वार दक्षिण की ओर, बेश द्वार पश्चिम की ओर और गाँधी द्वार उत्तर-पूर्व की ओर है।

भिल्सा में सबसे प्रसिद्ध स्थान विजय मन्दिर है। जिसे औरङ्गजेब ने तोड़वा कर मस्जिद बनवाया था। नगर की दीवार के पूर्व की ओर एक सरोवर बनवाया गया है जिसका पानी गरमी के दिनों में प्रयोग होता है।

भिल्सा नगर के समीप प्राचीन स्मारक बहुत हैं। लगभग १२ मील के वृत्त में बहुत से मन्दिर तथा बौद्ध स्तूप हैं। नदी के किनारे चरन तीर्थ प्रसिद्ध धार्मिक स्थान है जहां बहुत से मन्दिर हैं। भिल्सा में अशोक

पश्चिमी सतरम, नाग, नरवर और गुप्तवंश के समय की वस्तुएँ पाई गई हैं।

इस नगर को हिन्दू लोग भेलसा के नाम से पुकारते हैं। इसका प्राचीन नाम भिल्लास्वामी या भैलोश था। नगर की दीवार के एक लेख से पता चलता है कि यह नगर नेत्रावती (बेतवा) नदी के किनारे बना है। ब्राह्मणों की पुस्तक में इस नगर का नाम भद्रावती है। यहीं पर मवनाश्व नामक महाभारत काल का राजा रहता था जिसने महाराज युधिष्ठिर को महायज्ञ में बलिदान के लिये घोड़ा दिया था। जैन पुस्तकों में लिखा है कि कि इसी स्थान पर सीतल नाथ दसवें जैन तीर्थंकर पैदा हुये थे। उनकी स्मृति में प्रतिवर्ष उत्सव मनाया जाता है।

भिल्सा से तीन मील की दूरी पर उदयगिरि है। यह गुप्त राज्य में था। ऋतु संहिता नामक पुस्तक में इस नगर का नाम विदेश लिखा है। नवीं सदी में यह नगर मालवा के परमार राजाओं के अधिकार में गया। बारहवीं सदी में यह चालुक्य वंश के अधिकार में था। १२३५ ई० में अल्तमश ने अधिकार जमाया। १८वीं सदी में यह पेशवा के हाथ आया।

नगर के समीप ही घना बन है जिसमें सांकी,

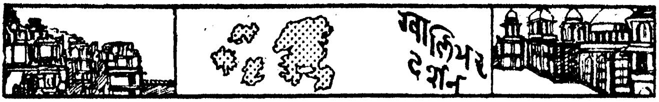
अंधेरी, भोजपुर, सात धार और सानारी के गांव हैं जो भोपाल राज्य में है। इन गांवों में बौद्ध काल के स्तूप तथा मन्दिर हैं।

दूधकुन्ड—शिवपुर ज़िले में एक प्राचीन गांव है। यहां पर प्राचीन जैन मन्दिर हैं। यहीं हरा गौरी का प्रसिद्ध मन्दिर है। यहां पर ५१ पंक्तियों का एक शिला लेख है।

कालीदेह या कालीदह—उज्जैन ज़िले में एक प्राचीन गांव हैं। यह सिप्रा नदी के किनारे पर है। यहां सिप्रा नदी में एक बड़ा ही सुन्दर विचित्र किला है। यह किला गरमी में शीतल रहता है। किले के कमरों में होकर नदी का पानी कालीदह या ब्रह्मकुण्ड में गिरता है।

नीमच—मन्दसोर ज़िले का एक परगना है। यह एक बड़ा कस्बा है। यहाँ मकान बनाने का पत्थर निकलता है। गल्ले, अफीम और रुई का व्यापार कस्बा में होता है।

इनके सिवा सबलगढ़, सीपरी, सुजालपुर, उदयगिरि, उदयपुर आदि प्रसिद्ध नगर हैं।



सेना

सेना विभाग ग्वालियर राज्य के सेनापति के अधिकार में है। सेनापति की सहायता के लिये चार जनरल हैं। प्रथम दो जनरल परेड और खर्च आदि की देखभाल करते हैं और दूसरे दो जनरल अस्त्र शस्त्रों तथा सैनिक सामान की देखरेख रखते हैं।

इनके सिवा आर्डेन्स अफसर हैं जो इञ्जीनियरिंग और सैनिक कार्यों की देख भाल करता है। तोपखाने घुड़सवार सेना और पैदल सेना के अलग अलग एक एक अफ़सर हैं जो कर्नल हैं।

ग्वालियर राज्य की सेना ब्रिटिश भारत की सेना की भांति ही बनी है।

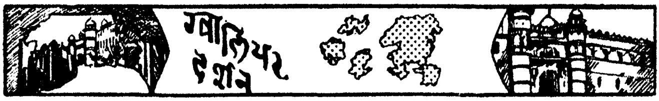
ग्वालियर राज्य की सेना तीन स्थानों पर रहती है। मोरार सैनिक जिला है इसलिये मोरार थाटीपुर और ग्वालियर किले में सेना रहती है। प्रत्येक सेना का अध्यक्ष कमांडिंग अफसर है। लश्कर, उज्जैन, करेरा और अम्बाद में भी फौज़ी छावनियां हैं जहां सेना रहती है। सेना के सभी भाग में सैनिकों को पेंशन दी

जाती है। वेतन का चौथाई भाग पेंशन के रूप में मिलता है। २१ साल तक नौकरी करने के बाद पेंशन मिलती है।

दर्बार में अलग से सेना है जिसमें हुज़रात पैगह, जरी पटक, रिसाल एक्कान, पगनवीसी और सिलहदारी लोग हैं। सिलहदारी ज़िले और परगनों में काम करते हैं।

बुरहानपुर की १८०४ ई० की संधि के अनुसार महाराज सिंधिया ने ६००० ब्रिटिश सहायक सेना रखना स्वीकार किया था इसलिये यह सेना ब्रिटिश सरकार की ओर से ग्वालियर सीमा पर रहती है। इसके सिवा ग्वालियर नरेश के पास ६००० पैदल तथा १० हजार सवार सेना है जो समय पर ब्रिटिश सरकार की सहायक होती है। ग्वालियर नरेश को सेना में ३२ तोपें तथा २०० तोप चलाने वाले भी हैं।

ग्वालियर नरेश युद्ध के समय ब्रिटिश सरकार की सहायता धन और सेना से करते हैं। गत महायुद्ध में उन्होंने बड़ी सहायता की थी। बर्तमान युद्ध में भी ग्वालियर नरेश ने प्रशंसनीय सहायता प्रदान की है।



पुलिस

ग्वालियर राज्य में पहले पुलिस और सेना में अधिक अंतर नहीं था। पुलिस का काम सेना के एक भाग के हाथ में था। १६०६ ई० में पुलिस विभाग अलग से संगठित किया गया। पुलिस विभाग का सबसे बड़ा अफ़सर इन्सपेक्टर जनरल पुलिस है।

प्रत्येक ज़िले में पुलिस का निरीक्षण करने के लिये सुपरिन्टेन्डेन्ट रखे गये हैं। भिंड, तोंवरगढ़, शिवपुर, नरवर, ईसागढ़, शाजापुर और मन्दसोर में सुपरिन्टेन्डेन्ट को सहायता के लिये इन्सपेक्टर नियुक्त हैं। सुपरिन्टेन्डेन्ट के ऊपर पुलिस का सहायक इन्सपेक्टर जनरल है।

मालवा सूबे की पुलिस का सब से बड़ा अफ़सर सब इन्सपेक्टर जनरल है।

ग्वालियर राज्य में ८६०० पुलिस है जिस पर १० लाख सालाना खर्च होता है। ईसागढ़, उज्जैन और ग्वालियर में पुलिस की भर्ती होती है। पुलिस ट्रेनिंग स्कूल राज्य के अन्दर खोले गये हैं जहाँ विद्यार्थी परीक्षा पास करते हैं और तीसरे दर्जे के सब-इन्सपेक्टर बनाये जाते हैं। हेड कान्स्टेबुल पुलिस को सब-इन्सपेक्टर बनने

के लिये ट्रेनिंग स्कूल की परीक्षा पास करनी पड़ती है। पुलिस को सज़ा देने के लिये भी न्यायालय खुले हैं।

ग्वालियर राज्य में तीन सेन्ट्रल जेल और ६ ज़िला जेल तथा ७२ परगनों के जेल हैं। सेंट्रल जेल लश्कर भैरोंगढ़ और मुंगौली में हैं। उज्जैन, मन्दसोर, भांडेर, सीपरी, सबलगढ़ और अम्बाह में ज़िला जेल स्थापित हैं। जेलों में लगभग एक लाख सालाना खर्च पड़ता है। जेलों में टाट, चटाई, दरी, कम्बल, और खद्दर तयार किये जाते हैं। जेलों का तयार किया हुआ सामान प्रजा से हाथ बेचा जाता है जिससे लगभग ७० हज़ार सालाना की आय होती है।



राज्य शासन

ग्वालियर नरेश को राज्य में सर्वाधिकार प्राप्त हैं। वह किसी भी राज्य-प्रजा का प्राणदण्ड अथवा जीवनदान दे सकते हैं।

वर्तमान समय में महाराज के कोई खास मन्त्री नहीं है। मन्त्री अथवा दीवान के स्थान पर एक छोटी सी सभा है जो महाराज के सामने मामलों को उनकी स्वीकृति के लिये भेजती है।

इस सभा का नाम मजलिस खास है। इसमें दस सदस्य हैं। मजलिस के प्रधान महाराज ग्वालियर नरेश हैं। राज्य काज ९ भागों में बँटा है। मजलिस खास के ९ सदस्यों में से प्रत्येक सदस्य एक विभाग की देख भाल करता है। राज्य के सभी काम तथा योजनायें मजलिस खास में ही तय की जाती हैं।

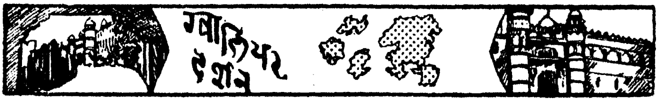
१—हुज़ूर दर्बार या महाराज का दफ़्तर। इसमें घर विभाग, राजनैतिक विभाग और न्याय विभाग के खास दफ़्तर हैं। दूसरा विभाग धरती के प्रबन्ध के लिये है। तीसरा विभाग चुंगी का काम करता है। चौथे

विभाग में न्यायालय का काम होता है। पाँचवा विभाग कोष विभाग है। छठवें विभाग में प्रजा-सम्बन्धी कार्य होता है जिसमें रेलवे, सड़कें और सिंचाई आदि का काम होता है। सातवाँ कर विभाग है जिसमें राज्य की आय तथा खर्च का ब्योरा रहता है। आठवाँ सैनिक विभाग और दसवाँ पुलिस विभाग है।

राज्य की भाषा देवनागरी है। लिखा पढ़ी तथा हिसाब किताब मरहठी में होता है। कुछ स्थानों पर अँग्रेज़ी भाषा प्रयोग होती है।

शासन के लिये ग्वालियर राज्य दो प्रान्तों में बँटा है। ग्वालियर प्रान्त में ७ ज़िले और मालवा प्रान्त में ४ ज़िले हैं। ज़िले परगनों में बँटे हैं। ज़िले का मालिक सूबादार होता है वह ब्रिटिश भारत के कलेक्टर की भाँति ही होता है। परगने का हाकिम कमासदार होता है।

गाँवों में नम्बरदार, पटवारी और चौकीदार होते हैं जो राज्य प्रबन्ध में सहायक होते हैं।



न्यायालय

राज्य में पहले संगठित रूप से न्यायालय नहीं थे। सर्वप्रथम १८८६ में न्यायालयों तथा कानूनों की ओर ध्यान दिया गया। १८५३ ई० में सर दिनकर राव ने अपने राज्य के न्याय के लिये संयुक्त प्रान्त के कानूनों को अपनाया था। धीरे २ ग्वालियर नरेश ने अपनी घोषणाओं तथा नियमों का एकत्रित करके ब्रिटिश भारत की भांति राज्य में भी न्यायालय के लिये कानून बना दिये हैं।

लश्कर में सबसे छोटी अदालत मुन्सिफ की है। मुंसिफ की अदालत के ऊपर सदर अमीन की अदालत है। सिटी मजिस्ट्रेट और सदर अमीन के अधिकार समान होते हैं।

मुंसिफ तीन हज़ार रुपये तक के मामले को अपनी अदालत में कर सकता है। सदर अमीन के अधिकार प्रथम श्रेणी के मजिस्ट्रेट के बराबर होते हैं। सदर अमीन की अदालत के ऊपर प्रान्त के जज की अदालत होती है। प्रान्त के जज ५० हज़ार रुपये तक के माल के

मुकदमे कर सकते हैं। सबसे बड़ी माल की अदालत चीफ कोर्ट अथवा सदर अदालत होती है।

ज़िलों में तीन प्रकार की अदालतें होती हैं। मुन्सिफ की अदालत सब से छोटी होती है। मुन्सिफ के ऊपर अमीन की अदालत होती है। उसके ऊपर प्रान्त या जज की अदालत होती है। जज की अदालत के ऊपर चीफ कोर्ट है।

मुन्सिफ लोग ५०० रु० तक के मुकद्दमे करते हैं। सदर अमीन ३,००० रु० तक के मुकद्दमे और प्रान्त का जज ५०,००० तक के मुकद्दमे करते हैं।

ग्वालियर राज्य में फौजदारी के सम्बन्ध में ७ अदालतें होती हैं। यह प्रथम द्वितीय और तृतीय श्रेणी के मजिस्ट्रेट, जिला न्यायाधीश, असिस्टेंट जज, प्रान्त जज और चीफ जज की अदालत हैं।

प्रथम श्रेणी के न्यायाधीश को २ साल की कड़ी सजा और १००० रु० जुर्माना और १५ कोड़े की सजा का अधिकार है। तीसरे श्रेणी के न्यायाधीश को एक महीने की सजा और ५० रु० जुर्माने का अधिकार है।

उज्जैन में विशेष न्यायाधीश हैं जिन्हें प्रथम श्रेणी के अधिकार हैं। मोरार और लश्कर की सेना के मुक़दमे करने के लिये अलग न्यायाधीश हैं।

ज़िलों में कामदार लोगों को प्रथम तथा द्वितीय श्रेणी के अधिकार हैं। सूबा लोगों को ज़िला न्यायाधीश के अधिकार प्राप्त हैं। प्रान्त के जज ही सेशन अदालत में बैठते हैं सभी नीचे वाले न्यायाधीश प्रान्त जज के अधिकार में होते हैं।

सदर अदालत अथवा चीफ कोर्ट के अधिकार बहुत बड़े हैं। प्राणदण्ड के सभी मामले महाराज ग्वालियर के सामने पेश किये जाते हैं। महाराज को प्राणदण्ड तथा जीवन दान प्रदान करने की आज्ञा है।



जागीर और माफीदार

ग्वालियर राज्य में किसानों के सिवा जागीरदार, माफीदार और जमींदार होते हैं। जागीरदारों को राज्य दरबार की ओर से जागीरें मिली हैं। जागीरदार राज्य घराने के रिश्तेदार और वह अफसर हैं जिन्होंने राज्य की सेवा तन-मन-धन से की है।

जागीरदार प्रथम तथा द्वितीय श्रेणी के सरदार कहलाते हैं। राज्य सम्बन्धी कार्यों तथा राज्य दरबार में उन्हें महाराज के दाहिने तथा बाएँ ओर विशेष स्थान बैठने को मिलते हैं। उन्हें नजराना तथा निछावर के बदले में कुछ विशेषाधिकार प्राप्त होते हैं।

ग्वालियर राज्य में २६० जागीर हैं। जिनमें पोरी, मिश्रान, अरोरा, बहादुरपुर, शिवपुर बरोदा, पहाड़गढ़, न्योरी-भोंरासा और पान बिहार मुख्य हैं।

अधिकांश जागीरदारों को अपने जागीरों में न्याय करने का अधिकार है। अधिक जुर्म के मामले राज्य के कचहरियों में होते हैं। जागीर का प्रबन्ध खराब होने अथवा अधिक ऋण हो जाने पर जागीर दरबार की ओर से कोर्ट आफ वार्डस में मिला ली जाती है।

जागीरदारों के बच्चों को शिक्षा प्रदान करने के लिये राज्य में एक स्कूल अलग से स्थापित है जहां पर उन्हें जागीर के प्रबन्ध करने और उन्हें कर्तव्य परायण होने का पाठ दिया जाता है।

टांकादारी या स्तमरारी छोटी रियासतें प्राचीन काल से खानदानी चली आती हैं। उन में या तो नाम के लिये कर है अथवा कुछ भी कर नहीं है। इनके मालिक राजपूत, ठाकुर और वह लोग हैं जिन्हें राज्य सेवा के बदले में भूमि दी गई है। इनमें उबारीदार लोग भी हैं जिनकी भूमि में बहुत कम लगान लगाया है। टांकेदारी या स्तमरारी नियम में १८७ सरदारी राज्य हैं जिनमें बल्ला-दल्खा, बरबरन, नौगांव, कनइया, अनन और आरोंदी बड़े हैं। माफीदार लोग राज्य को किसी प्रकार का भूमि कर नहीं देते हैं। माफीदारों में दो प्रकार के व्यक्ति हैं एक तो वह जिनके अधिकार में समस्त परगना या गांव है दूसरे वह जिनके अधिकार में कुछ भूमि अथवा खेत है।

मन्दिरों तथा दूसरे धार्मिक कार्यों के लिये माफी भूमि मिली है जिससे उनका खर्च चलता है। ब्राह्मण और पंडितों को भी माफी की भूमि से खर्च मिलता है।

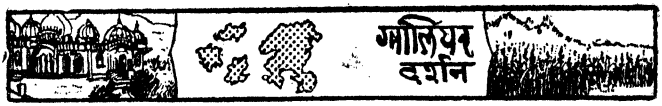
देश दर्शन

ग्वालियर राज्य में माफ़ीदारों की संख्या १६२६० है और उनके अधिकार में २०० वर्गमील भूमि है।

राज्य की शेष भूमि जमींदारों के अधिकार में है। जमींदार लोग संयुक्तप्रान्त के जमींदारों की भांति नहीं है। जब भूमि का प्रबंध होने लगता है तो कुछ वर्षों के लिये जमीन ठीके पर उठा दी जाती है। जमींदार लोग भूमि का कर राज्य दरबार में सालाना चुकाते रहते हैं।

जमींदारी दो भागों में बँटी है। १—वह जमींदारी जो एक व्यक्ति के अधिकार में है। दूसरी वह जो एक से अधिक व्यक्तियों के अधिकार में है उसके राज्य की ओर से एक नम्बरदार बनाया जाता है जो समय पर राज्य कर चुकता कर देता है। होली, दिवाली, दशहरा और मुहर्रम के समय जमींदार मालगुज़ारी से खर्च करते हैं। राज्य दरबार से उन्हें ढाई प्रति शत गांव की माल-गुजारी में से खर्च करने का अधिकार है। यह खर्च गांव-खर्च में लिखा जाता है।

कुछ जमींदारी ऐसी हैं जो खानदानी हैं। जमींदार को लगान में कमी या अधिकता करने का अधिकार नहीं होता है।



राज्य दर्बार

ग्वालियर नरेश का दर्बार बड़ौदा अथवा उदयपुर नरेशों से कहीं कम सीधा सादा है। इसका मुख्य कारण यह है कि ग्वालियर नरेश अधिकतर अपना समय राज-नीति तथा राज्य काज में लगाते हैं। भारत के और दूसरे बड़े राजाओं की अपेक्षा उनका रहन-सहन सीधा सादा है।

जिस समय दर्बार की तयारी होती है महाराज तथा सर्दारों और और रेजीडेण्ट की सवारियां निकलती हैं जिन्हें देखने के लिये सड़क पर बड़ी भीड़ हो जाती है। महल के चोबदार दरबारी लोगों का स्वागत सीढ़ी पर ही करते हैं। वह लोगों को दरबार में ले जाते हैं जब महाराज अपने सुसज्जित घोड़े से उतरते हैं तो भीड़ से "वाह महाराज" की ध्वनि गूँज उठती है।

दर्बार में पहुंचने के पहले एक बड़ा कमरा पड़ता है। महाराज का सिंहासन सोने और चाँदी का बना है। महाराज की दाहिनी ओर युवराज का सिंहासन रहता है। महाराज के सिंहासन के दाएँ बाएँ पंक्तियों में राज्य

दर्बार के सभासदों, सरदारों, जागीरदारों आदि की गद्देदार कुर्सियां लगी रहती हैं।

यदि बाहरी लोग महाराज से भेंट करने के लिये आते हैं तो महल के चोबदार महाराज के पास सूचना देते हैं और आज्ञा मिलने पर उन्हें दरबार में पहुंचाते हैं। महाराज मिलने वालों से बड़ी सरलता के साथ बातें करते हैं।

ग्वालियर दर्बार में नाचने वाली बालिकाएँ हैं जो दर्बार के एक कोने में दर्बार के समय नाचती गाती हैं। यह युवतियाँ अपनी कला से दर्बार को मस्त बनाने का प्रयत्न करती हैं।

दर्बार के अंत में दरबारियों को इत्र-पान बांटा जाता है। यह काम बड़ी सावधानी के साथ होता है। प्रत्येक दरबारी के हाथ में मलमल की एक रुमाल दे दी जाती है। सभी रुमाल को अपनी दाहिनी हथेली पर रख लेते हैं उसके बाद महाराज उठते हैं और योरुपीय सदस्यों को अपने हाथ से इतर तथा पान देते हैं। वह फूलों की माला भी उनके गले में डालते हैं। मन्त्री गणों में एक उठकर राज्य के दूसरे सभा सदों को

इत्र-पान देता है और माला पहिनाता है। उसके बाद योरुपीय लोग उठकर महाराज और युवराज से हाथ मिलाते हैं और फिर बाहर चले जाते हैं। उन्हें द्वार तक पहुँचाने के लिये चोबदार उनके साथ जाते हैं।

महाराज के उठ जाने पर दरबार उठता है और लोग महाराज को सप्रेम प्रणाम करते हैं। उसके बाद लोग अपने अपने स्थानों को चले जाते हैं।

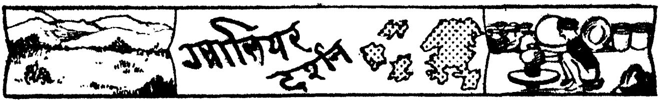
भारतीय दरबारों में शिष्ठता का बड़ा ध्यान रक्खा जाता है।

देश दर्शन

खेती

समस्त ग्वालियर राज्य में एक समान ही खेती की जाती है। वर्षा होने पर ही खेती का काम आरम्भ होता है। मालवा में खेतों की घास खर द्वारा साफ की जाती है उसके बाद मई मास के अन्त में खेतों में जोताई आरम्भ की जाती है। उत्तरी ग्वालियर में बखर का प्रयोग नहीं किया जाता वर्षा होने पर ही जोताई की जाती है। जब धरती को मुलायम करने के लिये काफी वर्षा हो जाती है तो बोंनी (बीज बोना) आरम्भ होती है।

बोने के बाद जब पौदे बड़े हो जाते हैं और घास भी पौदों के साथ बढ़ जाती हैं तो निराई करके घास निकाल दी जाती है। पोस्त: अलसी, सरसों, मूंग, तिल उर्द आदि खेत में ऊपर छितराए जाते हैं परन्तु जुवार और बाजरे की बोनी हल में नाई बांध कर की जाती है। जब पौदे लगभग दो फुट के हो जाते हैं तो डोरा या छोटे हल से पौदों के मध्य जोताई की जाती है जिससे मिट्टी मुलायम हो जावे और घास मर जावे। उत्तरी



ग्वालियर में इसे "खुरपना" कहते हैं। फसल तयार होने पर कटाई होती है।

बाजरे, जुवार आदि की कटाई में खड़े होकर केवल बाल या भुट्टे काटे जाते हैं परन्तु और दूसरे पौदे नीचे से काटे जाते हैं। गेहूँ आदि के पौदे उखाड़ लिये जाते हैं।

काटने के बाद पौदों का बोझ बांध कर खलिहान में लाते हैं और फिर वहां मोंगरी अथवा दांय के द्वारा नाज निकालते है।

मालवा प्रान्त के कुछ भागों तथा ग्वालियर में खेतों में दोबार बोनी होती है। धान काटने के बाद उसी खेत में चना और मटर आदि बोए जाते हैं। मार पत्थ और काबर धरती में सावाँ, काकुन और राली बोए जाते हैं। मालवा प्रान्त में पोस्ते की फसल काट कर मक्का बोई जाती है। कभी कभी और दूसरे पौदे भी पोस्ते के खेतों में बोए जाते हैं।

जुवार और बाजरे में अरहर, मूंग, उर्द और तिल आदि मिला कर बोए जाते हैं। पोस्ते की फसल तीन या चार महीने में तयार होती है। ईख की फसल के

तयार होने में दस-बारह महीने लग जाते हैं। ग्वालियर का गुड़ मालवा से अच्छा बनता है। ग्वालियर में ईख की खेती भी अधिक होती है। ईख माघ मास में बोई जाती है।

मालवा में परती भूमि तोड़ कर पहले चना बोते हैं और फिर गेहूँ, जुवार, जौ और रूई बोते है। ग्वालियर में परती भूमि तोड़ने पर पहले तिल बोया जाता है। तिल के बाद कोदों, कुटकी, जुवार और राली आदि बोए जाते हैं।

पोस्ता, ईख, जौ, गेहूँ और साग तरकारी तथा बाटिका वाले पौदों में खाद का प्रयोग होता है।

खाद गाय, बैल, भैंस आदि के गोबर से तयार की जाती है। गोबर छोटे गढ़ों में डाल दिये जाते हैं। यह खाद १२ महीने में तयार होती है। खेतों में भेड़ तथा बकरी के झुँड रात को बैठाए जाते हैं और उनसे खाद ली जाती है।

पोस्ता, ईख, साग, तरकारी और पान की फसलें तयार करने के लिये सिंचाई की जाती है। उत्तरी



ग्वालियर के उपजाऊ प्रदेश में जौ, धान, मिर्चे आदि के खेतों में भी सिंचाई होती है।

खेती के लिये सिंचाई की भी बड़ी आवश्यकता है। ग्वालियर राज्य में नदियों सिंचाई का काम नहीं लिया जाता है। पानी वर्षा ऋतु में एकत्रित किया जाता है और उसी से सिंचाई होती है। कुएँ तथा तालाबों से ही सिंचाई की जाती है। नटवर, भिलसा और ईसागढ़ ज़िलों में परशियन व्हील से और मालवा में चरस (चमड़े की झोली) से सिंचाई होती है। पुर अथवा चरस खींचने के लिये बैलों का प्रयोग होता है सुँडीय चरस को आदमी भी खींच सकते हैं। जिन कुवों का पानी बहुत नीचे नहीं होता वहां ढेंकुली द्वारा पानी निकाला जाता है। तालाबों का पानी दोबारो अथवा दुगला द्वारा खेतों में पहुँचाया जाता है।

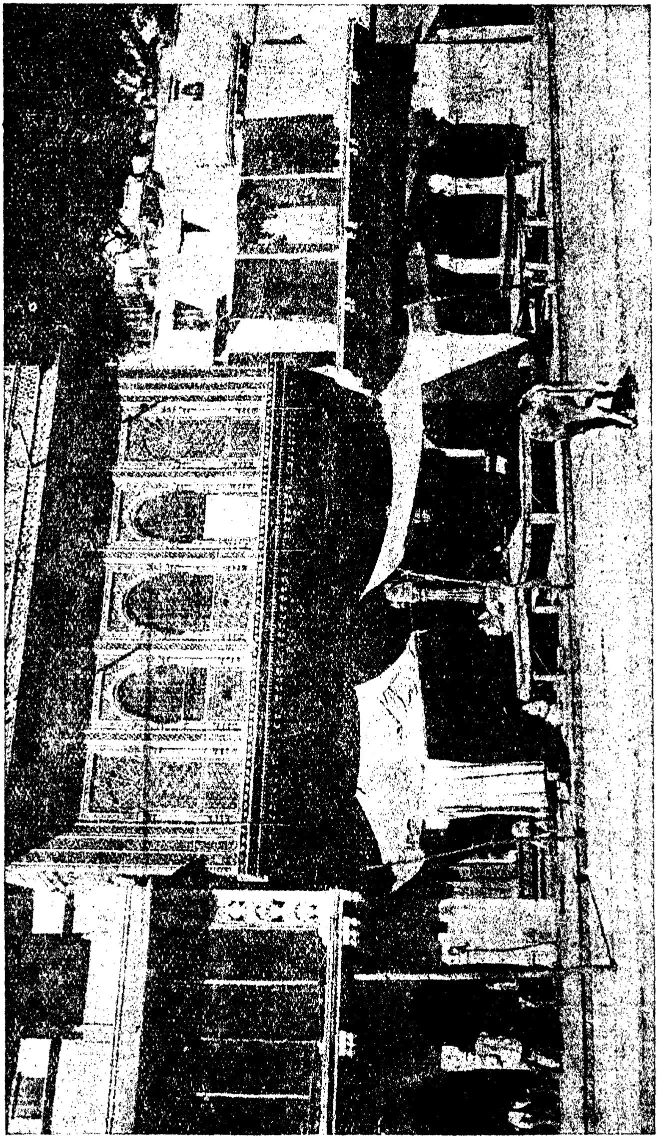
ग्वालियर राज्य में सिंचाई के लिये बहुत से तालाव तथा कुएँ बनाए गये हैं। तालावों के बनाने में बहुत खर्च पड़ता है परन्तु कुवाँ थोड़े खर्च में तयार हो जाता है। कच्चा कुवां तयार करने में २० से २०० रुपये तक लगते हैं और पक्का कुवाँ तयार करने में ५०० से २००० रुपये तक लग जाते हैं।

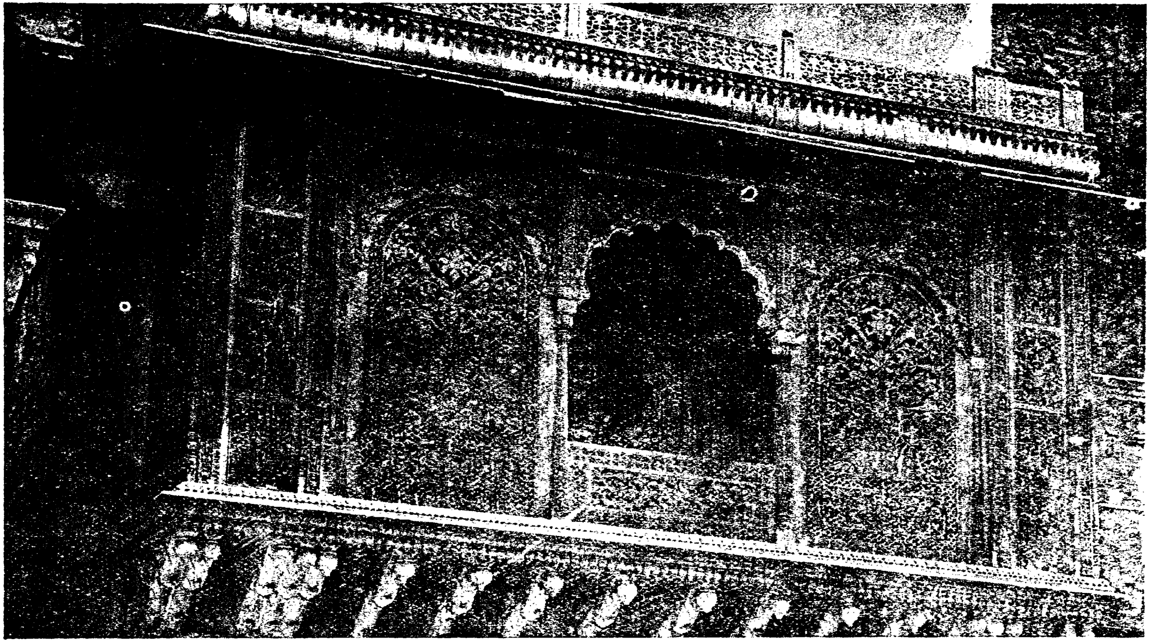
देश दर्शन

ग्वालियर राज्य के प्राचीन स्थान

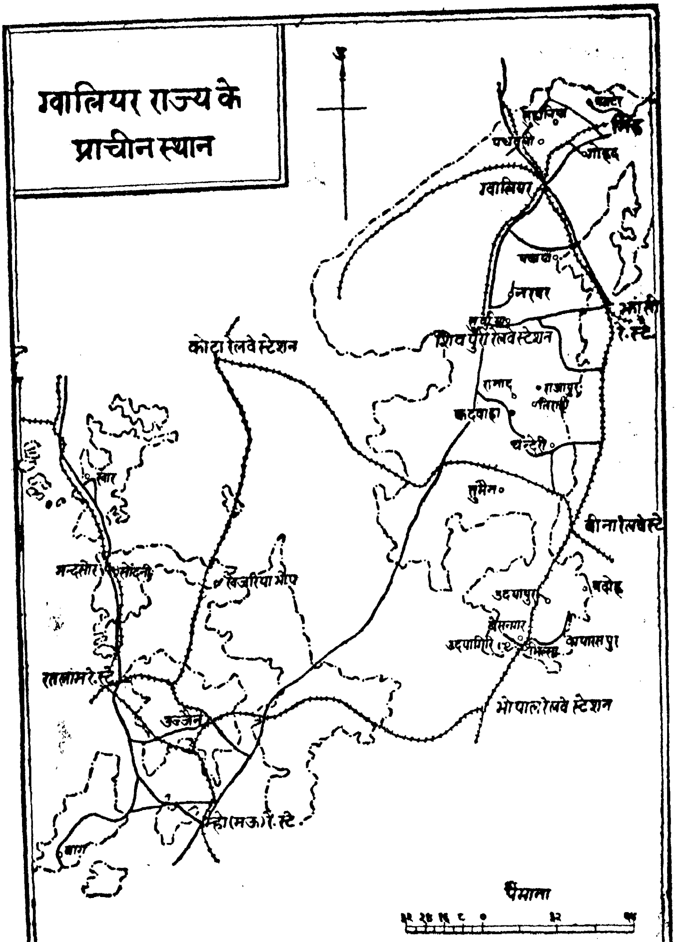
ग्वालियर राज्य में भारतवर्ष के अनेक प्राचीन स्थान पाये जाते हैं। किसी समय में इन स्थानों से न केवल भारतवासी वरन् विदेशी लोग भी परिचित थे। अपने समय में इन्होंने भारतवर्ष का गौरव बढ़ाने में पूरा हाथ बटाया। फिर इन पर दैव का कोप हुआ और वे ऐसे नष्ट भ्रष्ट हो गये कि अब उनका परिचय देने की आवश्यकता होती है। यहाँ पर इनका केवल संक्षिप्त परिचय दिया जा सकता है। (विशेष परिचय ग्वालियर राज्य के पुरातत्व विभाग द्वारा प्रकाशित ग्रंथों से मिल सकता है।

प्राचीन उज्जैनी वर्तमान उज्जैन नगर के पास ही बसी थी। उज्जैन के उत्तर में शिप्रा या क्षिप्रा नदी के दांये किनारे इसकी स्थिति बड़ी सुन्दर थी। राजा वत्स और विक्रमादित्य ने इसे अपनाया था। यहीं मौर्य और गुप्त वंशीय राजाओं की प्रान्तीय राजधानी थी। प्राचीन समय में उज्जयनी व्यापार, कारीगरी और विद्याओं के लिये प्रसिद्ध थी। इसकी धार्मिक और राजनैतिक महत्ता भी थी। प्राचीन नगर जहां पर बसा था वहाँ पर इस समय





ग्वालियर—पत्थर पर की गई कारीगरी का एक नमूना


ग्वालियर राज्य के
प्राचीन स्थान
ग्वालियर
गोहद
नरवर
शिवपुरी रेलवे स्टेशन
कोटा रेलवे स्टेशन
चन्देरी
बीना रेलवे स्टे.
उदयपुर
उदयगिरि
ग्यारसपुर
भोपाल रेलवे स्टेशन
उज्जैन
रतलाम रे. स्टे.
मन्दसौर
बाग
पैमाना
संकेत
पक्की सड़क

ईंट की टूटी फूटी दीवारों के खंडहर हैं जिसे कोट या गढ़ कहते थे। जहाँ महाकाल बन था वहीं आजकल वर्तमान उज्जैन नगर है। पृथिवी के गर्भ में प्राचीन उज्जैनी के क्या क्या चिन्ह छिपे पड़े हैं यह बतलाना कठिन है। लेकिन ऊपरी भाग में मध्यकालीन नक्काशी के टुकड़े, सिक्के आदि बहुत मिलते हैं। घाटों के अतिरिक्त भर्तृहरि की गुफा, चौबीस खम्भा, बिना नींव की मस्जिद, कालियादह का जल-महल, पुरानी सराय, जन्त्र-मन्त्र (सवाई जैसिंह की वेधशाला), महाकाल मन्दिर, गोपाल मन्दिर और क्षिप्रा नदी के घाट दर्शनीय स्थान हैं।

१—भर्तृहरि गुफा का सम्बन्ध श्री भर्तृहरिजी से अवश्य है लेकिन यहां के प्राचीन लिंग से अनुमान किया जाता है कि यह ग्यारहवीं शताब्दी में एक शिव मन्दिर था। पुराने खंडहरों और क्षिप्रा की लाई हुई मिट्टी से पड़ोस की ज़मीन ऊँची हो गई और मन्दिर एक गुफा सा मालूम होने लगा।

२—चौबीस खम्भा भी ग्यारहवीं सदी की इमारत है। इस में चौबीस खम्भे थे।

३—बिना नींव की मस्जिद पुराने हिन्दू और जैन मन्दिरों

को तोड़ कर उन्हीं की नींव पर खड़ी की गई। इसके लिये अलग नींव नहीं खोदनी पड़ी इसी लिये यह नाम पड़ा। इसके द्वार पर खुदे लेख से प्रगट होता है कि मालवा के प्रथम स्वाधीन सुल्तान दिलावरखां ने इस मस्जिद को १४०३ ई० में बनवाया था।

४—कालियादह महल क्षिप्रा नदी में स्थित एक द्वीप पर बना है। मुसलमानों के आने से पूर्व इसे ब्रह्मकुण्ड कहते थे। महल मालवा के तीसरे सुल्तान नसीरखाँ ने १५०० ई० में बनवाया था।

५—पुरानी सराय सम्राट अकबर के शासन काल में १५७६ ई० में बनी थी।

६—वेधशाला को यन्त्रमहल कहते हैं। इसे १८वीं शताब्दी में जैपुर के राजा सवाई जैसिंह ने बनवाया था जब मुग़ल सम्राट ने उन्हें मालवा का सूबेदार नियुक्त किया था। इन्हें ज्योतिष से बड़ा प्रेम था। भारतीय ज्योतिष के अनुसार प्रथम देशान्तर यहीं (उज्जैन) होकर जाती थी।

७—महाकाल मन्दिर भारतवर्ष के उन १२ शिव-मन्दिरों में से है जिन्हें ज्योतिर्लिंग कहते हैं। पुराना मन्दिर

मुसलमानी समय में नष्ट हो गया। उसी के स्थान पर श्री रानो जी सिन्धिया के ब्राह्मण दीवान रामचन्द्र बाबा ने बनवाया था।

८—गोपाल मन्दिर में श्रीकृष्ण जी की मूर्ति है। इसमें चांदी के दरवाज़े हैं। इसे महाराजा दौलत राव सिन्धिया की महारानी बैजा बाई ने बनवाया था।

९—क्षिप्रा नदी के घाट बड़े सुन्दर हैं। इन घाटों में अनेक देवताओं के मन्दिर हैं। सिंहस्थ मेले के अवसर पर यहां यात्रियों की बड़ी भीड़ हो जाती है। वर्तमान उज्जैन नगर बम्बई-बड़ौदा और सेन्ट्रल इण्डिया रेलवे का एक बड़ा स्टेशन है।

विदिशा—नगर का वर्णन बौद्ध, जैन और आर्य ग्रन्थों में आया है। यह बौद्ध उपनिवेश का एक बड़ा केन्द्र था। इसके भग्नावशेष पड़ोस के सांची-स्तूपों में मिलते हैं। यहां अग्निमित्र की राजधानी थी। कालिदास के प्रसिद्ध काव्य मालविकाग्निमित्र में इसके उल्लेख हैं। विदिशा के विद्यापीठ में दूर दूर से विद्यार्थी विद्या ग्रहण करने आते थे। विद्वान लोग विदिशा को वर्तमान बेस नगर मानते

हैं। वह भिल्सा के पास तक फैला हुआ था जहाँ बहुत से प्राचीन भग्नावशेष पाये जाते हैं।

लोहांगी चट्टान, लोहांगी पीर का मकबरा, महमूद शाह की मस्जिद, गुम्बज़ का मकबरा, बिजामंडल की मस्जिद देखने योग्य है। बिजा मस्जिद प्राचीन विजय मन्दिर को तोड़ कर उसी के सामान से बनाई गई। इसके खम्भों पर संस्कृत के लेख खुदे हैं। यह मन्दिर ११वीं शताब्दी में बनाया गया था। बेस नगर के पड़ोस में हेलियोडोरस का गरुड़ स्तम्भ है जिसे एक यूनानी ने बनवाया था जो वैष्णव हो गया था। इस पर पाली लेख खुदा हुआ है। यह यूनानी विदिशा के राजा भागभद्र के दरबार में राजदूत बन कर आया था।

भिल्सा रेलवे स्टेशन से ४ मील की दूरी पर उदयगिरि की गुफायें हैं।

पद्मावती—नाग राजाओं की राजधानी थी। विष्णु पुराण और भवभूति के मालती माधव नाटक में इसका विशद वर्णन है। यहां एक प्रसिद्ध विश्वविद्यालय था। संगव के पास ही परमार ठाकुरों का बनवाया हुआ

क़िला (जीर्णावस्था में) है। यहीं धूमेश्वर महादेव का मन्दिर और कुछ मक़बरे हैं।

पवाया पहुँचने के लिये दब्रा रेलवे स्टेशन (जी० आई० पी०) से ६ मील तक पक्की सड़क है। इसी से एक कच्ची सड़क जाती है।

दशपुर की स्थिति उस स्थान पर है जहां आजकल मन्दसौर नगर बसा है। यहाँ की विशाल शिव मूर्ति, तोरण स्तम्भ किला और राजा यशोधर्मन के स्तम्भ दर्शनीय हैं। तोरण स्तम्भ एक नाले में से खोद कर निकाला गया है। यहाँ के किले को अलाउद्दीन खिल्जी ने १४ वीं शताब्दी में बनवाया था। सम्राट यशोधर्मन ने हूण लोगों को मध्यभारत से छठीं शताब्दी के मध्य में मार भगाया था। इसी विजय की स्मृति में यहां ४० फुट ऊँचे और साढ़े तीन फुट घेर वाले खम्भे खड़े करवाये थे। हरएक पत्थर ५४०० मन भारी है। इस प्रकार का पत्थर १०० मील तक पड़ोस में कहीं नहीं मिलता है। दूर से इतने भारी पत्थर मंगाने में कैसी कठिनाई पड़ी होगी इसका अनुमान सहज ही में किया जा सकता है।

बट नगर के स्थान पर आजकल बदोह गांव

बसा है। जी० आई० पी० के कल्हार रेलवे स्टेशन से यह गांव १८ मील दूर है। गांव के दक्षिण में एक बड़ा तालाब है। इसके चारों ओर बहुत से मध्यकालीन भग्नावशेष हैं। गड़रमल मन्दिर, सोलह खम्भा, दशावतार मन्दिर, सतमढ़ी और जैन मन्दिर यहाँ के दर्शनीय स्थान हैं। गड़रमल मन्दिर सबसे ऊँचा है। इसका निचला भाग नवीं सदी में बना। यहां की दन्त कथा के अनुसार यह मन्दिर एक गड़रिये ने बनवाया था। इसीलिये मन्दिर का यह नाम पड़ा। सोलह खम्भा भवन की छत को १६ खम्भे साधे हुये हैं। यह आठवीं या नवीं सदी में बना। दशावतार मन्दिर में विष्णु के दस अवतार प्रतिष्ठित हैं। यह मन्दिर दसवीं शताब्दी में बना।

सतमढ़ी के सात मन्दिरों में कुछ शैव और कुछ वैष्णव हैं। जैन मन्दिर के २५ खंड हैं। इसके भाग में वेदी है। इनमें २४ जैन तीर्थङ्करों की मूर्तियां स्थित हैं।

कुछ ही दूर पथरी के पास सप्तमात्रिकायें पत्थर को काट कर बनाई गई हैं। इनमें संस्कृत के शिला लेख हैं। यहां एक अधूरी बराह-मूर्ति है।

नलपुर—को आजकल नरवर कहते हैं। यहाँ राजा

नल को राजधानी थी। इसके पड़ोस में कई मध्यकालीन संस्कृत शिला लेख मिले हैं। जिस पहाड़ी पर यहां का किला बना है। वह पड़ोस की ज़मीन से ५०० फुट ऊँचा है। इसका घेरा पांच मील है। समतल चोटी पर किला बना है।

चन्देरी—प्राचीन चन्देरी को बूढ़ी चन्देरी कहते हैं। बूढ़ी चन्देरी के खंडहर वर्तमान चन्देरी से ६ मील उत्तर-पश्चिम की ओर हैं। यहाँ का पहाड़ी किला प्रतिहार राजा कीर्तिपाल ने ग्यारहवीं शताब्दी में बनवाया था। शत मंजिला कोशाक महल महबूद शाह खिल्जी ने बनवाया था। बुन्देला राजाओं ने नौखंडा या हवा महल यहां बनवाया। बादल महल, जामा मस्जिद, निज़ामुद्दीन का कब्रिस्तान, शाहज़ादी का रौज़ा, परमेश्वर ताल, बत्तीसी बावली जिस में उतरने के लिये ३२ डंडे या पत्थर लगे हैं। यहाँ के दर्शनीय स्थान हैं। बूढ़ी चन्देरी में ९वीं और दसवीं शताब्दी के कई जैन मन्दिर हैं। चन्देरी पहुँचने के लिये मुंगावली रेलवे स्टेशन से २४ मील पक्की सड़क है। ललितपुर से चन्देरी केवल २१ मील दूर है।

गोहद—नगर वैशाली (सिन्ध की सहायक) नदी के दाहिने किनारे पर बसा है। यह नगर ग्वालियर शहर से २५ मील उत्तर-पूर्व की ओर स्थित है। इस नगर को १७वीं शताब्दी में धौलपुर के जाट राजपूतों ने बसाया था। नगर के चारों ओर तेहरी चार दीवारी है। सब से भीतर की ओर यहां का मज़बूत किला है। आज-कल किला बिगड़ी दशा में है। नगर के बाहर गोरों के कई मक़बरे हैं।

ग्यारसपुर—भिलसा-सागर सड़क पर भिल्सा स्टेशन से २४ मील दूर है। यहाँ कई बौद्ध जैन और ब्राह्मण कालीन स्मारक हैं। अठखम्भा, बज्रमठ, मालदेवी और बौद्ध स्तूप दर्शनीय हैं।

कदम्बगुह—(वर्तमान कदवाहा) नगर बीना-कोटा रेलवे की टेकनेरी स्टेशन से २४ मील दूर है। यहां कई दसवीं शताब्दी के शिव मन्दिर हैं। ब्रह्मचारियों का निवास-स्थान गढ़ कहलाता है।

खेजरिया भोप—एक नीची पहाड़ी पर बसा है। पहाड़ी को काट कर एक बौद्ध बिहार बनाया गया था।

बिहार में २८ गुफायें हैं। कुछ लोगों का कहना है कि इन गुफाओं को पांडवों ने बनाया था।

खोरगांव—अजमेर-खंडवा रेलवे के केसरपुर स्टेशन से ४ मील दूर है। यहां के नौतोरण दर्शनीय हैं।

तुम्बवन—(वर्तमान तुमैन) बीना-कोटा रेलवे की टेकनेरी स्टेशन से ४ मील दूर है। यहां तुम्बा (लौकी) अधिक होते थे इसी से यह नाम पड़ा। यहां दसवीं सदी का एक मन्दिर, प्राचीन हवनकुण्ड, बैठा देव, या जैन तीर्थंकर की विशाल मूर्ति देखने योग्य है। यहां खुदाई करने पर और बहुत सी प्राचीन सामग्री मिलने की आशा है।

उदयपुर—यह स्थान जी० आई० पी० की बीना-भिलसा रेलवे शाखा के बरेठ स्टेशन से ४ मील दूर है। यहां उदयेश्वर या नीलकंठेश्वर महादेव, बीजामण्डल या घड़ियालन का मकान, बारहखम्भो, पिसनहरी का मन्दिर, शाही मस्जिद महल और शेरखां की मस्जिद दर्शनीय है। मालवा के परमार राजा उदयादित्य ने इस नगर को बसाकर यहां उदयेश्वर मन्दिर और उदय समुद्र

(ताल) १०५६ ई० में बनवाया था। मन्दिर के कई भाग टूटे हुये हैं। कुछ लोगों का कहना है कि दिल्ली के तुगलक के सुल्तान मुहम्मद तृतीय ने मन्दिर को तुड़वा कर उसकी सामग्री से मस्जिद बनवाई, कुछ लोगों का कहना है कि इसे औरंगजेब ने तुड़वा डाला। सुरौया गांव शिवपुरी से १३ मील पूर्व की ओर स्थित है। यहां के कई पुराने मन्दिर, बावली और टूटा फूटा किला देखने योग्य है।

तेराम्भी—तेराही-गांव खड़वाहा से पांच मील उत्तर पूर्व की ओर स्थित है। यह शिव सम्प्रदाय का प्रधान केन्द्र रहा है। यहां युद्ध में प्राण त्यागने वाले कई योद्धाओं के स्मारक हैं।

सुहानिया—गांव जी० आई० पी० के मोरेना स्टेशन से २० मील दूर है। यहां दसवीं और बारहवीं सदी के कई हिन्दू और जैन मन्दिरों के खण्डहर हैं। काकनमठ, अम्बिका मन्दिर, हनूमान की मूर्ति, जैन तीर्थंकर की विशाल मूर्ति देखने योग्य हैं।

रानोद—यह नगर शिवपुरी से ३५ मील दूर है।

खोखय (शैव विहार), नागदेव (दो लपटे हुये सर्पों) की मूर्ति, झिंझरिया (कटे हुये पत्थरों की) मस्जिद देखने योग्य है।

राजपुर—जी० आई० पी० के बसाई स्टेशन से ३८ मील दूर है। यहां कुठिला मठ (बौद्ध स्तूप) बड़ा सुन्दर है।

पढ़ावली—गांव ग्वालियर-भिंड छोटी लाइन के रिठोरा स्टेशन से ४ मील दूर है। इसके पास ही कुन्ती पुरी में नागराजाओं की राजधानी थी। गढ़ी का पुराना मन्दिर, छाऊ कुआ, जीर्ण जैन आदि हिन्दू मन्दिर देखने योग्य हैं।

बाघ—इस स्थान को मऊ और इन्दौर से धार होकर ६० मील लम्बी पक्की सड़क गई है। यहां के प्राचीन महाकाल मन्दिर में शिवलिंग की स्थापना है। यह मन्दिर दसवीं या ग्यारहवीं शताब्दी में बना। बाघ नगर से ढाई मील की दूरी पर बौद्ध गुफायें हैं जिन्हें पांडव गुफा कहते हैं। बाघ नदी के ऊपर वाली पहाड़ी पर ये गुफायें पत्थर को काट कर बनाई गई हैं। इनमें सुन्दर चित्रकारी है।



ग्वालियर नगर—जी० आई० पी० रेलवे की बम्बई से दिल्ली जाने वाली प्रधान लाइन पर स्थित है। यह नगर झाँसी से ६० मील, आगरे से ७५ मील, दिल्ली से १६५ मील और बम्बई से ७६३ मील दूर है। यहां से (पक्की सड़क द्वारा) इटावा ७६ मील दूर है। ग्वालियर शहर के तीन भाग हैं। पुराना शहर क़िले की पहाड़ी के उत्तर में स्थित है। लश्कर पहाड़ी के दक्षिण में बस गया। यहां महाराजा दौलत राव सिन्धिया का १८०० ई० में फ़ौजी पड़ाव या लश्कर था। आजकल ग्वालियर का यही प्रधान भाग है। मोरार क़िले के पूर्व में स्थित है। यहां पहले ब्रिटिश फौज की छावनी थी। ब्रिटिश रेज़ीडेंट अब भी यहीं रहता है।

महाराज दौलत राव सिन्धिया ने ग्वालियर राज्य की राजधानी उज्जैन से बदल कर ग्वालियर शहर में बना ली। तब से यह शहर और भी अधिक उन्नति कर गया।

ग्वालियर शहर में कई प्राचीन दर्शनीय स्थान हैं।

ग्वालियर का किला चपटी चोटी वाली ३०० फुट ऊँची पहाड़ी पर बना है। उत्तर से दक्षिण तक यह पौने दो मील लम्बा और पूर्व से पश्चिम तक ६०० फुट से २८०० फुट तक चौड़ा है।

सिन्धिया राज्य वंशावली

रानोजी १७४५

- जयाप १७४५-१७५८
  - जनकोजी १७५६ (१७६१ में पानीपत के युद्ध में कैद हो गये और मार डाले गये)
- दत्ताजी
- जोतिब
- तुकाजो
  - दौलत राव (प्रपौत्र) १७६४-१८२७
    - (गोद लिया) जनकोजी राव १८२७-१८४३
      - (गोद लिया) भागीरथ राव अथवा जयाजी राव १८४३-१८८६
        - माधवराव जीवाजी राव १८८६-१६२५
- महादाजी १७६१-१७६४
